चतुर्थ अध्याय

" विवेच्य कहानियों का तात्विक विवेचन "

- : चतुर्थ अध्याय :-

' विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन '

प्रस्तावना :-

' कहानी ' अन्य विधाओं की तुलना में सर्वाधिक लोकप्रिय मानी जाती है | ये कम से कम समय में पढ़ी जा सकती है इसलिए ' कहानी ' का एक स्वतंत्र पाठक वर्ग निर्माण हुआ है | कहानी की एक विशेषता यह है कि, वह समस्त साहित्य विधाओं में एक ऐसी विधा है जो अपने लघु परिवेश में भी बृहत जीवन को अभिव्यक्त करने में समर्थ होती है | ' प्रेमचंद ' ने कहानी की परिभाषा देते हुए लिखा है , " कहानी वह ध्रुपद की तान है, जिसमें गायक महफिल शुरु होते ही अपनी संपूर्ण प्रतिभा दिखा देता है, एक क्षण में चित्र को इतने माधुर्य से परिपूरित कर देता है, जितना रात भर गाना सुनने से भी नहीं हो सकता |" [1] अर्थात् कम पृष्ठवाली, कम समय में पढ़ी और समझी जानेवाली कहानी में पाठक को भावविव्हल, आकृष्ट करने की क्षमता होती है |

' डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र ' ने कहानी के कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देश-काल-वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य यह तत्त्व स्वीकार किए हैं |

' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का तात्त्विक विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है |

1. कथावस्तु
2. चरित्र -चित्रण
3. कथोपकथन
4. देश-काल -वातावरण
5. भाषा-शैली
6. उद्देश्य

4.1 **शिनाख्त**

4.1.1 **कथावस्तु** : -

' कथावस्तु ' कहानी में सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है | जिसे अंग्रेजी में 'Plot ' या ' theme ' कहते हैं | कथावस्तु का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए डॉ.सरजू प्रसाद मिश्र लिखते हैं,' कथानक विश्वसनीय, स्वाभाविक एवं जीवन के यथार्थ से संबंधित होना चाहिए | वह किसी सत्य के उद्घाटन में समर्थ होना चाहिए ; उसमें संवेदना, संघर्ष, कुतूहल, औत्सुक्य और करुणा होनी चाहिए |" [2] अर्थात् कथावस्तु यथार्थ हो तो उसे विश्वसनीयता प्राप्त होती है | कथावस्तु कहानी के रीढ़ के समान होती है जिसमें विषय प्रतिपादन करते समय घटनाओं का सुनियोजित विवरण प्रस्तुत किया जाता है | कथानक की आरंभ, विकास, कौतूहल, चरम सीमा, अन्त ये पाँच अवस्थाएँ होती हैं | कहानी का शीर्षक सुंदर, मोहक केंद्रबिंदु पर आधारित एवं आकर्षक होता है | कहानी का आरंभ किसी दृश्य, घटना, पात्रों के वार्तालाप के अनुसार होता हैं | कहानी का विकास भाव सौंदर्य बढ़ाता है | कौतूहल के कारण पाठक कहानी की ओर आकृष्ट होता है | चरम सीमा में कहानी का लक्ष्य लेखक बताता है | अन्त सतर्कता से सुचारु रुप से बताया जाता है |

' नरेंद्र नागदेव ' द्वारा लिखित ' शिनाख्त ' कहानी का नायक संप्रदाय के कारण छिड़ गए दंगे में अपने परिचित अंकल को रस्सी से पीटता है| अतः दंगाईयों का साथ देने के आरोप में पुलिस उसे गुनहगार समझती है | प्रस्तुत आरोप से छुटकारा पाने के लिए नायक परिचित अंकल से मदद् माँगता है, जिससे वे साफ इन्कार कर देते हैं |

4.1.2 **चरित्र -चित्रण** :-

चरित्र -चित्रण कहानी का दूसरा एवं महत्त्वपूर्ण तत्त्व है | कथावस्तु की घटनाएँ जिन व्यक्तियों पर निर्भर होती है, उन्हें ' पात्र ' कहा जाता है | लेखक कहानी के उद्देश्य के अनुसार पात्रों का निर्माण करता है | पाठक के मन को कहानी जब छू जाती है, तब लेखक चरित्र-चित्रण करने में सफल हुआ है, ऐसा कहा जाता है | चरित्र-चित्रण की विधियों के बारे में ' डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल ' लिखते हैं, " व्यावहारिक दृष्टि से चरित्र-चित्रण के लिए चार साधनों का उपयोग किया जाता है ; वर्णन, संकेत,

कथोपकथन, और घटना कार्य-व्यापार ; इन्हीं के माध्यम से पात्रों के चरित्र -चित्रण होते हैं |"[3] अर्थात् पात्रों का चरित्र-चित्रण करते समय वर्णन शैली स्पष्ट हो और सूक्ष्म - से सूक्ष्म बातों का परिचय भी उससे होना आवश्यक है | संकेत अर्थात् पात्रों के स्वभाव, आचरण और व्यवहार का परिचय दिया जाता है | दो पात्रों के परस्पर वार्तालाप या पात्र को विविध परिस्थितियों में ड़ालकर उसके अनुसार उसके गुणों को अभिव्यक्त किया जाता है | कभी-कभी लेखक स्वगत द्वारा भी पात्रों का चरित्र चित्रण करता है | इस प्रकार लेखक उपर उलेखित किसी- न -किसी ढ़ंग से चरित्र - चित्रण करता हैं |

विवेच्य कहानी में कुल दो पुरुष पात्र 1. नायक 2. नायक के माने हुए अंकल हैं | उनके चरित्र - चित्रण निम्नलिखित हैं -

1. **नवयुवक / नायक** :-

नायक धमकानेवाला, क्रोधी, होशियार, विद्रोही, स्वार्थी इन रुपों में चित्रित है |

2. **अंकल** :-

अंकल एक वात्सल्य प्रेमी,मित्र की सहायता करनेवाले, अन्याय के प्रति विरोध करनेवाले इन्सान के रुप में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

4.1.3 **कथोपकथन** :-

कहानी का श्रेष्ठ एवं महत्त्वपूर्ण अंग ' कथोपकथन ' है | पात्र आपस में जो बातचीत करते हैं, उसी को कथोपकथन या संवाद कहते हैं | इस संदर्भ में ' जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ने ' लिखा है , " यदि देश-काल और संस्कृति विशेष का कोई प्राणी किसी से भी किसी प्रकार की बातचीत करता है तो उसकी बातचीत से प्रांजलता और विदग्धता, शब्द और वाक्य के प्रयोग भाषा और पदावली से हमें प्रत्यक्ष मालूम होता है कि व्यक्ति किस कोटि, वर्ग, देश और काल का है |"[4] अर्थात् पात्रों के कथोपकथन से उनकी संस्कृति, वर्ग आदि की पहचान होती है | कथोपकथन स्वाभाविक उपयुक्त और भावात्मक होते हैं | ये प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से कथानक के प्रवाह में सहायता करने के साथ पात्रों

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

का चरित्र-चित्रण करते हैं | कहानी का उद्देश्य साकार करने में सहायता करते हैं | ये सरल, संक्षिप्त, स्पष्ट, सौंदर्य बढ़ानेवाले, अर्थगर्भित, मनोरंजक होते हैं | इसकी भाषा पात्रों के अनुकूल होती है |

1. **पात्रों का चरित्र -चित्रण करनेवाले संवाद** :-

विवेच्य कहानी में पात्रों का चरित्र चित्रण करनेवाले इन संवादों में पात्रों की विशेषताओं के दर्शन होते हैं | तथा कहानी प्रवाहमयी बनती है |

"अंकल : मुझे यहाँ क्यों बुलाया ?

युवक : दरअसल बात यह है... अंकल... आप तो जानते ही हैं कि दंगों के बाद सी.बी. आई. पुलिस - सब मेरे पीछे हाथ धोकर पड़े हैं ... इनका बस चले जिंदगी भर मुझे जेल में पीसते रहें. अब इनका घेरा भी मेरे आसपास कसता जा रहा है |

अंकल : तो ?

युवक : तो मैंने आपको सिर्फ यह कहने के लिए बुलाया था, कि कल जब वे आपसे पूछेंगे कि किसने तुम पर इतने अत्याचार किए थे .. तो आप .. मेरी शिनाख्त मत करना |" [5]

विवेच्य संवादों द्वारा कथानक को गति मिलने के साथ ही युवक की मानसिक स्थिति का पता चलता है |

विवेच्य कहानी में संवाद घटनाओं के संकेत से आगे बढ़ते हैं |

4.1.4 **देश-काल-वातावरण** :-

देश-काल-वातावरण कहानी का एक तत्त्व है | ये ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ग्राम्य, प्राकृतिक, महानगरीय आदि होते हैं | कहानी में देश-काल-वातावरण का हृदयग्राही चित्रण किया गया तो वह प्रभावात्मक एवं विश्वसनीय बनता है | वातावरण संबंधी ' त्रिभुवन सिंह ' लिखते हैं ," वर्ण्य, व्यक्ति अथवा समाज के आचार-विचार, रहन सहन, रीति-नीति, भाषा और उसके आस-पास घिरी परिस्थितियाँ ही देश -काल और वातावरण की संज्ञा धारण करती हैं |" [6] अर्थात्

कहानी में चित्रित देश-काल-वातावरण से व्यक्ति या समाज की जानकारी उसके परिवेश के साथ होती है | जिससे पात्रों के व्यक्तित्त्व में स्पष्टता दिखाई देती है |

विवेच्य कहानी में देश-काल वातावरण का ध्यान रखा गया है | विवेच्य कहानी आतंक प्रभावित समाज व्यवस्था पर आधारित है जिसमें आतंक प्रभावित शहर के प्रसिद्ध होटल का चित्रण किया है | विवेच्य कहानी दृश्य रुप में एक दिन की अवधि में चित्रित की गई है| जिसमें नायक को अंकल का होटल में इंतजार करते समय विगत अनुभव याद आते हैं | अंकल पिछले दिनों शहर में छाये दंगों के बारे में बोलते हैं | विवेच्य कहानी में महानगरीय वातावरण का चित्रण किया है |

4.1.5 **भाषा-शैली** :-

1. **भाषा** :-

भाषा मनोभावों और विचारों को अभिव्यक्त करने का एक साधन है | इसमें शब्द-योजना,पद,वाक्य -विन्यास, मुहावरे -कहावतें, अलंकार इनका प्रयोग किया जाता है | यह लिखित साधन है | इसका कहानी में विशिष्ट स्थान है | भाषा भावप्रवण, माधुर्य , ओज, संप्रेषण वहन पात्रानुकूल होनी चाहिए |

विवेच्य कहानी की भाषा पात्रों के रहन-सहन के अनुकूल है |

मुहावरें :-

1. चेहरे पर चमक आना (शिनाख्त, पृ.18)
2. टुकड़ों में बोलना (वही , पृ.18)
3. हाथ धोकर पीछे पड़ना (वही, पृ.20)

अंग्रेजी शब्द :-

विवेच्य कहानी में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है जो कहानी के अर्थ में बाधा नहीं बनते | जैसे- लाइफ, डिजाइन, फोकस, सिलेक्ट, प्रिंट, एअर कंडीशनर आदि |

ध्वन्यार्थक शब्द :-

झप - झपा, मुड़ -मुड़कर |

2. **शैली** :- शैली को अंग्रेजी में ' style ' कहा जाता है | अभिव्यक्ति का विशिष्ट ढ़ंग अथवा विचारों एवं भावना को अभिव्यक्त करने की पद्धति को ' शैली ' कहा जाता है | प्रत्येक लेखक की अलग शैली हो सकती है | फिर भी कहानी की निम्न शैलियाँ प्रधान रुप से प्रचलित हैं |

1. **साधारण वर्णनात्मक शैली** :- ये आसान, सीधी, साधारण शैली है | लेखक कथा कहता जाता है | वह पात्रों तथा घटनाओं की शृंखला को तैयार करके कथावस्तु के द्वारा सारी बातें बताता हैं| अधिकांश कहानियाँ इसी शैली में लिखी जाती है |

2. **आत्मचरित्र शैली** :- इसे ' प्रथम पुरुष एकवचन ' भी कहा जाता है| इसमें लेखक स्वयं ' मै ' के रुप में कहानी जीवन चरित्र के भाँति लिखता है |

3. **संलाप शैली** :- इसमें कथानक और चरित्र का विकास पात्रों के वार्तालाप से किया जाता है |

4. **पत्र शैली** :- इसके अनुसार लेखक सारी घटनाएँ पत्रों द्वारा प्रकाशित करता है |

5. **डायरी शैली** :- इसमें कहानी संस्मरण रुप में लिखी जातो है |

इसके सिवा नाटकीय, मिश्रित, स्वप्न शैली, पूर्वदीप्ति शैली, पात्रहीन शैली इनका भी प्रयोग कहानियों में किया जाता है |

विवेच्य कहानी में वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं | जैसे -" हालाँकि पेड़ फिर से हिलने - डुलने की यथासंभव कोशिश करते हैं | हवा के झोंके भी गलियों में सरसराने का मन तो बना लेते हैं... जख्मी होने के बावजूद और हवेलियों के चेहरों पर छपी घनीभूत पीड़ा को पोंछने की कोशिश भी करते हैं - कि अब छोड़ो भी ... लाइफ मस्ट गो ऑन ... " [7]

प्रस्तुत कहानी में वर्णनात्मक शैली द्वारा आतंक से सँवरता शहर चित्रित किया गया है |

4.1.6 <u>उद्देश्य</u> :-

कहानीकार किसी - न- किसी उद्देश्य से कहानी लिखता है | इनमें सुधार, उपदेश, मनोरंजन, सिद्धान्तों का प्रचार, यथार्थ स्थिति आदि उद्देश्य हो सकते हैं | उद्देश्य की अनिवार्यता के संदर्भ में ' डॉ. प्रतापनारायण टंडन ' लिखते हैं, " सैध्दांतिक दृष्टिकोण से प्रत्येक कहानी की रचना का एक उद्देश्य होता है |" [8] अर्थात् कहानी में उद्देश्य के तौर पर जीवन के किसी लक्ष्य या दशा की ओर संकेत होता है | प्रत्येक कहानी में उद्देश्य दृष्टव्य होता ही है | कहानी का उद्देश्य मनोरंजन के साथ मानव - जीवन की अनुभूतियों का हृदयस्पर्शी और मार्मिक चित्र उपस्थित करना होता है |

विवेच्य कहानी संप्रदाय के कारण निर्माण हुई आतंकवाद की भीषण समस्या के परिणामों को दर्शाने में सफल हुई है |

4.2 **<u>प्रेतकामना</u>**

4.2.1 **<u>कथावस्तु</u>** :-

' मनीषा कुलश्रेष्ठ ' द्वारा लिखित ' प्रेतकामना ' कहानी के नायक ' महेश्वरपंत ' बुढ़ापे में अकेले जीवन यापन कर रहे है | अचानक एक दिन उनसे मुलाकात करने उनकी पूर्व छात्रा ' अणिमा ' आती है जो कॉलेज जीवन से सर के प्रति अनुराग करती थी | महेश्वरपंत और अणिमा भावना विवश होकर अवैध शरीर संबंध रखते हैं, हालाँकि विवेच्य कहानी प्रेम - संबंध पर आधारित है | प्रस्तुत बात से महेश्वरपंत के मन में विचारों का बवंड़र उठता है, नैतिक - अनैतिक का संघर्ष छिड़ता है | लेकिन अंत में वे इस अंतर्द्वद्व का उपाय ढूँढ़ते हैं | प्रस्तुत कथानक भावप्रधान, रोचक, एवं नाटकीय है |

4.2.2 **<u>पात्र; चरित्र -चित्रण</u>** :-

विवेच्य कहानी में १.डॉ महेश्वर पंत २. अणिमा ये प्रमुख पात्र है |

1. **<u>डॉ. महेश्वर पंत</u>** :-

डॉ. महेश्वर पंत होशियार, प्रतिभावान, होनहार, अकेले, स्वाभिमानी, वृद्ध व्यक्ति के रुप में चित्रित है |

2. **अणिमा** :-

अणिमा नौकरीपेशा नारी, अपने विचारों पर अड़िग रहनेवाली, प्रेरणादायी नारी के रुप में चित्रित है |

गौण पात्र :-

विवेच्य कहानी में ' सलिल ' यह गौण पात्र चित्रित है | वह स्वार्थी, क्रोधी, जोरु का गुलाम, पिता के प्रति कर्तव्य पूर्ति हेतु प्रेम से व्यवहार करनेवाला इस रुप में चित्रित है |

4.2.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद पात्रानुकूल सारगर्भित एवं स्वाभाविक हैं | डॉ. महेश्वर पंत अणिमा से बातें करते हुए कहते हैं |

" सर : एन्थ्रोपोलोजी तो ऐसा वास्ट सब्जेक्ट है कि इसमें अवसरों की कमी नहीं | आगे रिसर्च करो ... यहाँ एड़हॉक बनकर कैरियर बनाने का क्या मतलब ! बाहर निकलो ... विदेश जाओ !

अणिमा : मैं यही ठीक हूँ सर.

सर : क्या मतलब ?

अणिमा : आपकी छत्रछाया में

सर : मेरे यश से कुछ टुकड़े यश पाने की आकांक्षा, व्यर्थ है अणिमा ... यह तो स्वयं अर्जित करना पड़ता है . मैं वैसा नहीं हूँ ... सॉरी अणिमा ... मुझसे सिफारिश की उम्मीद मत करना |

अणिमा : बस, इतना ही समझे न आप ?

सर : ऐसी नारीवादिता का क्या जो पुरुष में अपना सहारा ढूंढ़े | [9]"

विवेच्य संवाद प्रसंगानुकूल एवं पात्रानुकूल हैं | इससे पात्रों के आंतरिक व बाह्य गुणों को सहजता प्राप्त हुई हैं |

4.2.4 **देश -काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में महानगरीय वातावरण का चित्रण किया है | कहानी दो दिन की अवधि में पूरी होती है | पहले दिन सर और अणिमा की मुलाकात, सलिल का पापा से मिलने आना और दूसरे दिन सर द्वारा अणिमा एवं सलिल के साथ फोन पर किया गया प्रसंग |विवेच्य कहानी कॉलेज परिवेश और महेश्वरपंत के फ्लैट में घटित होती है | इस तरह देश-काल -वातावरण की अन्विति करने में लेखिका को सफलता मिली है |

4.2.5 **भाषा -शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा भावप्रधान, पात्रों के रहन-सहन, आचार-विचारों के अनुकूल हैं| तथा सरस एवं प्रवाहमयी हैं |

पुनरुक्तिवाले शब्द :-

बचता -बचाता, कहते-कहते, धीरे-धीरे, कम-से-कम आदि |

संस्कृत शब्द :-

प्रविष्ट, छत्रछाया , मुद्रा आदि |

अंग्रेजी शब्द :-

लिफ्ट, एयरहोस्टेस, प्रोजेक्ट, एन्जॉय, रिटायर, बर्थ डे आदि |

विवेच्य शब्दों से कहानी में रोचकता आई हैं |

विवेच्य कहानी में प्रश्नोत्तर शैली, पूर्वदीप्ति शैलियों का प्रयोग दिखाई देता हैं |

पूर्वदीप्ति शैली :-

पात्र वर्तमान में घटित किसी प्रसंग द्वारा अतीत की बातों को जब याद करता है तो उन अतीत की बातों को लेखक लिखता है, इससे ' पूर्वदीप्ति (flashback) शैली ' के दर्शन होते है | इस शैली से विवेच्य कहानी में व्यक्ति चरित्र -चित्रण किया गया है | जैसे-सलिल अपने पापा को उनकी शोध छात्रा अणिमा के साथ देखता है तो उनके बारे में अपनी दादी द्वारा दी गई राय को याद

करता है | उसकी दादी ने सलिल की माँ को कहा था, " ऐसी खुली छुट्टी लड़कियों से लल्ला को दूर रखा कर री बहू | " [10] इससे सलिल के भाव बोध संवेग के साथ प्रकट होते हैं |

4.2.6 **उद्देश्य** :-

विवेच्य कहानी द्वारा वृद्धावस्था में प्रतिभा के सहारे जीवन सुचारु रुप से जीने की प्रेरणा निर्माण करने में लेखिका को पूरी सफलता मिली है |

4.3 **पब्लिक**

4.3.1 **कथावस्तु** :-

' रामधारी सिंह दिवाकर ' द्वारा लिखित ' पब्लिक ' कहानी में जेल से सजा व्यतीत कर आये ' बैताल सिंह ' और ' डायमंड' राजनेता बनते हैं | अपने स्वार्थ के लिए वे आपस में झगड़ते हैं, गुंड़ागर्दी के सहारे दूसरों के मकान, पैसे छीनते हैं | भुदनिया जमीन हत्याकांड़ में मृतकों के परिवारों का पुनर्वसन करने हेतु से सरकार द्वारा उन्हें सहायता निधि देने की बात मनाते हैं | मृतकों के घरवाले अपने नेता डायमंड़ के पास कृतज्ञता व्यक्त करने आते हैं तब देखते हैं कि, राजनेता गुंड़ों के साथ हिंसा की साजिश में एक साथ हैं |

प्रस्तुत कहानी का अंत नाटकीय एवं प्रभावशाली है |

4.3.2 **चरित्र -चित्रण** :-

विवेच्य कहानी में आदर्श की नहीं बल्कि यथार्थ की दृष्टि से पात्रों का सजीव चरित्रांकन किया है |

प्रमुख पात्र :-

1. **बैताल सिंह** :-

स्वार्थी, विधायक, अमीर, निम्न वर्ग पर अत्याचार करने की प्रवृत्ति, अपराधी, गुंड़ा इस रुप में लेखक ने बैताल के चरित्र पर प्रकाश ड़ाला है |

2. **डायमंड़** :-

डायमंड़ का गुंड़ा, विधायक, गरीबी से अमीर बननेवाला , जोतदारों का प्रतिनिधित्त्व करनेवाला राजनेता इन रुपों में लेखक ने चरित्र- चित्रण किया है |

3. **बौधू** :-

बौधू के अनपढ़, गँवार, आम आदमी के रुप में राजनेता की जानकारी रखनेवाला इन गुणों पर प्रकाश ड़ाला है |

4. **बनारसी** :-

बनारसी का चरित्र बौधू के समकक्ष ही प्रस्तुत किया है |

5. **घूरनसिंह** :-

घूरनसिंह के राजपूत, अमीर व्यक्ति, ईर्ष्यालु, निम्न वर्ग के लोगों की उन्नति न देख पाना इन गुणों का चित्रण विवेच्य कहानी में लेखक ने किया है |

गौण पात्र :-

प्रस्तुत कहानी के गौण पात्र राजो सिंह, टेकन गुरुजी का कार्य प्रसंगानुकूल हैं, जो कथावस्तु को गतिशील बनाने में सहायक बने हैं |

4.3.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद संक्षिप्त एवं सार्थक हैं | ये पाठक के मन में जिज्ञासा बढ़ाते हैं | जैसे -

" बनारसी : काहे नहीं होगी धन- दौलत. बड़का-बड़का ठेका है लाखों - लाख का .

बौधू : आपको तो सब पता होगा गुरुजी. सुनने में आया है रेलवई का दू - तीन कड़ोर का ठेका डायमंड बाबू और बैताल सिंह ने मिलकर लिया है, अपने - अपने लोगों के नाम से | " [11]

प्रस्तुत संवाद कथानक में कौतूहल निर्माण होने के साथ पात्र चरित्र -चित्रण करते हैं | ये आकर्षक, सजीव प्रतीत होते हैं |

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

4.3.4 **देश -काल -वातावरण** :-

विवेच्य कहानियों की घटनाएँ भुदनियां जमीन, पटना में डायमंड का बंगला, पटना जंक्शन और विधानसभा में घटित हुई | काल के बारे में विचार किया जाए तो विवेच्य कहानी एक रात में घटित होती है | बौधू , बनारसी, टेकन गुरुजी का बातें करते - करते डायमंड के बंगले की ओर जाना, बंगले पर पहुँचते ही नाटकीय घटनाओं अर्थात् सभी नेताओं को गुंड़े राजो सिंह के साथ देखना | विवेच्य कहानी में महानगरीय राजनीतिक वातावरण का चित्रण किया है | इस प्रकार देश- काल- वातावरण का चित्रण विवेच्य कहानी में चित्रित है |

4.3.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा पात्रों के रहन - सहन के अनुकूल हैं | ये गाँव की बोलचाल की भाषा है | ये बिहारी भाषा है |

गालियों से युक्त भाषा का प्रयोग :

घूरनसिंह गाँव में परिवर्तन होता हुआ देखकर गालियों से युक्त भाषा का प्रयोग करते है, " ठीक ही कहा है गोसाई जी ने ! ऐसा कलजुग आएगा कि सुद्दर राज करेगा. देख लीजिए, कैसे बिला गए राजपूत, बाह्मण भुमिहार ! राड़ सोलकन का राज आ गया |" [12]

पुनरुक्तिवाले शब्द :-

बड़ी -बड़ी, अलग -अलग, फिफ्टी -फिफ्टी आदि |

विवेच्य कहानी की भाषा पात्रानुकूल, परिस्थितिनुकूल हैं |

विवेच्य कहानी में ' वर्णनात्मक शैली ' के दर्शन होते हैं | विवेच्य कहानी में घूरनसिंह के बेटों ने भूदान यज्ञ में अपनी 500 एकड़ जमीन में से 15 एकड़ बालूवाली जमीन दान दी उस संदर्भ में विवेच्य कहानी में लेखक ने लिखा है, " इलाके के कितने ही किसानों ने जमीन दी और यश कमाया फिर बाबा अपने लिए भीख माँग रहे थे कितना उद्देश्य था उनका सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे भवन्तु निरामया | लेकिन इसी गाँव का जोगी भाट घूरन सिंह के भूदान पर हँसा ... उसने तुकबंदी गढ़ी थी |

संत विनोबा को करे भूदान

बूढ़ गाय बाभन को दान. " [13]

इस प्रकार विवेच्य कहानी में लेखक द्वारा " वर्णनात्मक शैली ' का प्रयोग किया गया है |

4.3.6 **उद्देश्य** :-

विवेच्य कहानी के माध्यम से लेखक ने राजनीति में फैली अराजकता, भ्रष्ट नीति का पर्दाफाश करते हुए आम जनता धूर्त, स्वार्थी राजनेताओं की पूरी जानकारी रखती है, इस उद्देश्य को बताने में लेखक को सफलता मिली है |

4.4 **एक लड़की की मौत**

4.4.1 **कथावस्तु** :-

' लवलीन ' द्वारा लिखित ' एक लड़की की मौत ' कहानी की नायिका को सपने देखने की आदत है | इसलिए वह अकेली रहने लगी, दिन में भी सपने देखने लगी | प्रस्तुत बात को जानकर उसे उसके अभिभावकों ने डाँटा, पर उसने अपनी सपने देखने की आदत छोड़ी नहीं | उसके घरवालों ने उसके प्रेम का भी विरोध किया | उसने सपने में जब अपनी मौत देखी तो जीवन जीना बहुत अच्छा होता है इस एहसास के जागने पर उसने सपने देखने की आदत छोड़ दी |

विवेच्य कहानी का अंत रोचक, आकर्षक और प्रभावशाली बना है |

4.4.2 **चरित्र - चित्रण** :-

विवेच्य कहानी में ' नायिका ' यह एक ही प्रमुख पात्र है | विवेच्य कहानी में लड़की का नामकरण नहीं किया गया है | यह नायिका अंतर्मुखी, मनमाना व्यवहार करनेवाली, सपनों की दुनिया में जीनेवाली इन रूपों में चित्रित है |

गौण पात्र :-

विवेच्य कहानी में लड़की की माँ, उसका प्रेमी, अभय चाचू ये गौण पात्र चित्रित है | जो कहानी में प्रसंगानुकूल आये हैं | वे कहानी को आगे बढ़ाने में सहायक हुए हैं |

4.4.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी ' वर्णनात्मक शैली ' में होने के कारण कथोपकथन का अभाव दिखाई देता है |

4.4.4 **देश-काल-वातावरण** :-

विवेच्य कहानी चरित्र प्रधान होने से कहानी की नायिका का बचपन से किशोरावस्था तक का चित्रण है | अतः उसका परिवेश उम्र के साथ बदलता रहता है | बचपन में माँ के साथ घर में, बड़ी होने पर पाठशाला फिर विश्वविद्यालय में जाती है | पर इनका सिर्फ संकेत दिया गया है | कहानी पढ़ते समय कथोपकथन के अभाव के कारण यह गाँव में या शहर में घट रही है इस बात का अंदाजा भी नहीं आता |

4.4.5 **भाषा-शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, सुबोध है |

पुनरूक्तिवाले शब्द :-

उमड़-उमड़कर, बेहद-बेहद, कभी-कभी, जैसे-जैसे आदि |

शब्द योजना :-

रोना - सुबकना, गुम - गुस्से, गीले - रसीले, इच्छाओं - आकांक्षाओं आदि |

मुहावरें :-

बलि चढ़ाना | (एक लड़की की मौत, पृ.28)

शिकार होना | (' वही ' पृ.28)

संस्कृत शब्द :-

पग, निराकार, मुखमुद्राएँ यथातथ्य, निरापद, अंतःप्रज्ञा आदि |

अंग्रेजी शब्द :-

स्कूल, ड़िजर्व, कमांड आदि |

विवेच्य कहानी में ' स्वप्न शैली ' का प्रयोग किया है | इसके द्वारा कल्पना से निर्मित मानव जीवन की विभिन्न मानसिक स्थितियों और विकृति का चित्रण लेखिका ने किया है | कहानी की नायिका एक दिन सपने में अपनी मौत देखती है, इस संदर्भ में लेखिका ने लिखा है, " वह आँगन में जमीन पर पड़ी है. सब घरवाले उसके पास है. चादर बिछी गई है. पंड़ित मंत्र बोल रहे हैं. उसका प्रेमी भी वहाँ आया है. लड़की ड़र जाती है. घरवाले उसे पहचानेंगे. वह जीना चाहती है |" [14] इससे लड़की की अचेतन अवस्था का पता चलता है |

स्वप्न शैली से कहानी रोचक बन पड़ी है |

4.4.6 <u>उद्देश्य</u> :-

जीवन अनमोल है, इसे सपने में नहीं गुजारना चाहिए इस उद्देश्य को बताने में ' लवलीन ' को पूरी सफलता मिली है |

4.5 **अंधेरे में आकार लेता नाटक**

4.5.1 **कथावस्तु** :-

' दूर्वा सहाय ' द्वारा लिखित विवेच्य कहानी में नायिका पंकज की पत्नी रेल से यात्रा कर रही है | जिसमें वह देखती है सामने की कोच पर बैठे दो यात्री स्त्री -पुरुष अश्लील हरकतें कर रहे हैं | तभी नायिका की पहचानवाला टी.सी. वहाँ आता है | जो कुछ रुपए मिलने पर वहाँ से रफा - दफा होता है | उसके पश्चात् नायिका सो जाती है | दूसरे दिन स्टेशन पर उतरने के उपरांत नायिका निरीक्षण करती है वे दोनों स्त्री -पुरुष अलग -अलग राहों की ओर चले गए |

विवेच्य कहानी में सामान्य प्रसंग को कलात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है |

4.5.2 **पात्र चरित्र-चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

पंकज की पत्नी :-

पंकज की पत्नी के दया, ममता, जिज्ञासू वृत्ति, निरीक्षण करना, बातों को जानना - समझना, रिश्वतखोरी की घृणा करना इन विशेषताओं पर प्रकाश ड़ाला गया है |

गौण पात्र :-

विवेच्य कहानी में चित्रित पंकज,उसकी बेटी, टी.सी., रेल में सफर करनेवाले एक मर्द और औरत ये गौण पात्र प्रसंगानुकूल आये हैं | जो कहानी को गति प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुए हैं |

4.5.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद सरल, स्पष्ट, पात्रानुकूल हैं | जैसे-

" टी.सी. - पंकज जी स्टेशन पर. समझ गया आप जा रही हैं .(वह हँसा और उसने दुबारा पूछा)

पंकज की पत्नी - हां .

टी.सी. - सब ठीक है न मैड़म ?" [15]

टी.सी. के इशारे से पंकज की पत्नी द्वारा एक नोट देने पर उसे लेकर वह चला गया |

इस तरह विवेच्य कहानी के संवाद पात्रों के चरित्र -चित्रण करने में सफल हुए हैं |

4.5.4 **देश- काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी के प्रारंभ में रेल स्टेशन के वातावरण का संकेत मिलता है | " ट्रेन आकर प्लेटफार्म पर लग गई. आंधी के तेज झोंके की तरह लोग भागे. सीटी बजी. उसके बजने तक भाग-दौड़ चलती रहीं. ट्रेन चल दी. कुली लगभग चलती ट्रेन से कूदा." [16] स्थल के बारे में विचार किया जाए तो कहानी रेल के एक डिब्बे में घटित होती है | विवेच्य पूरी कहानी रात से सुबह तक की अवधि में घटित होती है | इस प्रकार देश-काल-वातावरण चित्रण करने में लेखिका सफल हुई हैं |

4.5.5 **भाषा शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सुबोध है |

पुनरूक्तिवाले शब्द :

पहुँचते - पहुँचते, रात-रात आदि |

शब्द-क्रम :

नैन-नक्शवाली, आमने-सामने, भाग-दौड़ तमाकू-सिगरेट आदि |

अंग्रेजी शब्द :

यूनिवर्सिटी, सेलर गैंग, टी.सी., टेंडर, नार्मल आदि |

मुहावरें :

1. फिदा होना ; (अंधेरे में आकार लेता नाटक, पृ.40)
2. धराशायी होना ; (' वही ' पृ.41)

शब्दों का विकृत रूप :

अफरा-तफरी |

फारसी शब्द :

आदम, हव्वा, जेहन आदि |

विवेच्य शब्दों के प्रयोग से भाषा में मिठास आई हैं |

विवेच्य कहानी में ' कथात्मक शैली ' का प्रयोग किया है | इसमें लेखिका कहानी बताती है, जो पंकज की पत्नी की ' आप बीती ' है |

4.5.6 **उद्देश्य** :-

विवेच्य कहानी द्वारा रिश्वतखोर टी.सी., रेल में गंदगी फैलाना, रेल में अश्लील हरकतें, भोली लड़कियों को फँसाना इनकी ओर पाठकों का ध्यान खींचने के उद्देश्य में लेखिका को पूरी सफलता मिली है |

4.6 **भेड़ियाधसान**

4.6.1 **कथावस्तु :-**

' राजेन्द्र सिन्हा ' द्‌वारा लिखित ' भेड़ियाधसान ' कहानो के पति - पत्नी समीर व सुभद्रा पुत्र कामना की मन्नत माँगने बैद्‌यनाथधाम की यात्रा कर रहे हैं | यहाँ भीड़ के कारण अनेक असुविधाओं को झेलते हुए भगवान के चमत्कार की आशा वे करते हैं | समीर को पुजारी द्‌वारा इस बात की जानकारी मिलती है कि, बलि दिये गए पशुओं का मांस प्रसाद रुप में दिया जाता है तो उसे घृणा होती है | वह अपनी पत्नी के साथ यात्रा को वही समाप्त कर घर आता है |

4.6.2 **पात्र चरित्र-चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

समीर :- समीर शिक्षित, अंधविश्वासी है पर अंत में अपनी भूल पर पछतावा होने पर वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण का पालन करनेवाला है | इस तरह भावना में बहनेवाले आम आदमी का चित्रण करने में लेखक कामयाब हुए हैं |

सुभद्रा :- सुभद्रा पतिपरायण नारी, शिक्षित, विज्ञान पर विश्वास करनेवाली, दयालु, पति को उचित मार्ग पर लाने के लिए सफल कोशिश करनेवाली पत्नी के रुप में चित्रित है |

गौण पात्र :-

विवेच्य कहानी में पुजारी, दल के मुखिया सरदार ये गौण पात्र चित्रित है, जो कहानी का उद्‌देश्य सफल बनाने में सहायक हुए हैं |

4.6.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद मार्मिक है| जैसे - पुजारी बाबा धाम न जाने के बारे में समीर से बताते हैं |

" समीर : पुजारीजी, आप कांवर लेकर बाबाधाम नहीं जाते ?

पुजारी : आश्विन का महीना था. शुक्ल पक्ष नौमी. भोलेनाथ का मंदिर. मंदिर में पुजारो. बलि प्रदान होगा. भैंस के इक्कीस नर बच्चे. क्रोध के प्रतीक भैंसे. भैंसे की बलि दी जाएगी ... बारी - बारी मशिनवत् इक्कीस भैंसों की बलि. पुत्र माँगने वाले भक्त प्रसाद ले जाएँ |" [17]

इस तरह विवेच्य कहानी के संवाद प्रभावशाली, अर्थपूर्ण हैं , जो कहानी को प्रवाहमयी बनाते हैं |

4.6.4 **देश -काल -वातावरण** :-

विवेच्य कहानी की घटनाएँ सुल्तानगंज की धर्मशाला, होटल, गंगा का किनारा, रास्ते में आनेवाला मंदिर यहाँ घटित होती हैं | काल सावन का महीना, दूसरा सोमवार है | पूरी कहानी तीन दिन की अवधि में घटित होती है | पहला दिन सुल्तानगंज पहुँचना, धर्मशाला में रहना | दूसरे दिन यात्रा आरंभ, तीसरा दिन पुजारी द्वारा बलि की बात सुन कर समीर का घर वापिस आना | इस प्रकार विवेच्य कहानी में धार्मिक वातावरण का चित्रण किया है |

4.6.5 **भाषा -शैली** :-

विवेच्य कहानी में संस्कृत शब्दों का प्रयोग हुआ है |

जैसे - मनोरथ, पात्र, रजस्वला, हठयोग, तपस्या, कर्मण्येवाधिकारस्ते आदि |

शब्द -योजना :-

उठक -बैठक, चाय -पान, बीड़ी -सिगारेट, नाश्ता -पानी, संध्या - संगीत |

ध्वन्यार्थक शब्द :-

पटा -पट -पटा -पट , चलऽ चलऽ चलऽ |

विवेच्य शब्दों से रोचकता परिलक्षित होती हैं |

विवेच्य कहानी में ' वर्णनात्मक शैली ' का प्रयोग दृष्टव्य है | जैसे - सरदार द्वारा बताई गई गंगा-पूजन की विधि : -" एक हाथ में अठन्नी और दूसरे में फूल. गंगा प्रवेश कर पहली डुबकी लेते समय फुल और अठन्नी पानी के भीतर छोड़ देना है. हां. अब दो पात्रों में गंगा से जल माँग कर भरिए . बड़े पात्र का जल बैद्यनाथधाम पहूँचकर भगवान शंकर के जलाभिषेक के लिए रखिए. छोटे पात्र का

जल पावित्री कहलाएगा |" [18] इस प्रकार सबसे आसान, सीधी, साधारण शैली में पाठक को घटनाओं की सूक्ष्म बातों की जानकारी प्राप्त होती है |

4.6.6. <u>उद्देश्य</u> :-

धार्मिक विषय पर आधारित विवेच्य कहानी द्वारा शिक्षित लोगों का अंधविश्वास में फँसना; पशु हत्या करना पाप है यह जानकर वैज्ञानिक दृष्टिकोन का परिचय देना, यही उद्देश्य है |

4.7 <u>मधुबन में राधिका</u>

4.7.1 <u>कथावस्तु</u> :-

' गजल जैगम ' द्वारा लिखित ' मधुबन में राधिका ' कहानी की नजमा बाजी पुरुषों से नफरत करती है फिर भी पुरुष उससे दोस्ती करने की कोशिश करते रहते हैं |नजमा की दोस्ती के कारण साजिद जैसे कई लोगों के घर टूट गए हैं | जब नजमा की मर्जी के अनुसार परिवेश नहीं होता तो वह परिवेश को अपनी मर्जी से ढ़ालने के लिए आत्महत्या का सहारा लेती हैं | स्वास्थ्य ठीक होने पर परिवेश को मनमाना पाकर वह खुश होती हैं |

4.7.2 <u>चरित्र -चित्रण :-</u>

<u>प्रमुख पात्र</u> :-

<u>नजमा बाजी</u> :- नजमा हठी, मनमाना आचरण करनेवाली, असंगत आचरण करनेवाली, स्वार्थी, स्वच्छंद, रंगीन, धर्म के अनुसार व्यवहार करनेवाली, नौकरी पेशा महिला के रुपों में विवेच्य कहानी में चित्रित हैं |

<u>गौण पात्र</u> :-

विवेच्य कहानी में साजिद, कथावाचक महिला, साजिद की पत्नी साइमा, नजमा के दोनों पति गौण पात्र हैं | जो कहानी के कथानक को गति देने में प्रभावी भूमिका अदा करते हैं |

4.7.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद पात्रों का चरित्र -चित्रण करनेवाले हैं | तथा संक्षिप्त है |

" साजिद : नजमा तुमको कई बार फोन कर चुकी हैं ... तुम कहाँ हो ? उनसे फौरन बात कर लो .

कथावाचक : खैरियत ? मुझे नहीं पता.

नजमा : मैं नजमा बोल रही हूँ.

कथावाचक : जी फरमाइए ?

नजमा : अच्छा सुनो, तुम और तुम्हारे दूल्हा आज रात हमारे साथ खाना खाओ..." [19]

विवेच्य कहानी के संवाद कथानक को प्रवाही बनाने, पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं की जानकारी बताने में सहायक हुए हैं |

4.7.4 **देश -काल -वातावरण**:-

विवेच्य कहानी में पार्टी और अस्पताल के वातावरण का चित्रण मिलता है | समय के बारे में पार्टी शाम को शुरु हो गई थी यह बात पता चलती है |

4.7.5 भाषा -शैली :-

विवेच्य कहानी में ' उर्दू ' भाषा का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है | यही इसकी प्रमुख विशेषता हैं | शब्दों के कोष्टक में अर्थ दिए है |

उर्दू -फारसी शब्द :-

अहबाब, मुकम्मल, अफ़साना निगारों, आमेज (दुखभरा) सामईन (श्रोता) , तिलिस्म (जादू) नशिस्त (बैठक), तशरीफ, तश्तरी, मश्शाक (निपुण) आदि |

लेखिका ने विवेच्य कहानी द्‌वारा अपनी अलग शैली में लेखन किया है इससे किसी प्रचलित शैली का बोध नहीं होता |

4.7.6 **उद्‌देश्य** :-

नजमा के चरित्र -चित्रण द्वारा असंगत महिला के आचरण -व्यवहार का चित्रण विवेच्य कहानी में लेखिका ने किया है |

4.8 **दृष्टि** :-

4.8.1 **कथावस्तु** :-

' जितेन्द्र भगत ' द्वारा लिखित ' दृष्टि ' कहानी में अभय दृष्टिहीन होते हुए जीवन में सकारात्मक दृष्टि को अपनाकर खुशी से रहता है | तो उसी का मित्र ' अम्लान ' स्वयं को विकलांग समझ कर नकारात्मक दृष्टि से जीवन जीता है | लेकिन वह कहानी के अंत में जीवन को अपनी मजबूरियों के साथ स्वीकारते हुए सकारात्मक जिंदगी जीने को राजी होता है |

4.8.2 **पात्र चरित्र -चित्रण**:-

प्रमुख पात्र :-

अभय :- अभय सच्चा दोस्त, सकारात्मक दृष्टि से जीवन जीनेवाला, आंदोलन में सहयोग देनेवाला, दुनिया की जानकारी रखनेवाला, दृष्टिहीन इन गुणों पर प्रकाश ड़ाला गया हैं |

अम्लान :- अम्लान दृष्टिहीन, होशियार, शक करनेवाला, जिद्दी, अपमान और सहायता को सहन न कर सकनेवाला, प्रेमी इन रुपों में चित्रित है |

गौण पात्र :-

विवेच्य कहानी में दीदी, मंजरी ये गौण पात्र चित्रित है | जिनका कार्य कहानी में प्रसंगानुकूल हैं |

4.8.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद प्रभावोत्पादक, संक्षिप्त हैं जैसे -

" अम्लान : सुबह - सुबह कहां गए थे ?

अभय : रावतजी को बधाई देने गया था.उनके घर लड़का हुआ है .

अम्लान : वाह !

अभय : अच्छी बात यह है कि बच्चा अपने माँ -बाप की तरह दृष्टिहीन नहीं है." [20]

विवेच्य संवादों द्वारा पात्रों के गुणों पर प्रकाश ड़ाला गया है | ये संक्षिप्त, सुबोध है |

4.8.4 **देश -काल -वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में दृष्टिहीन लोगों के नजदीक के सामाजिक वातावरण का चित्रण किया है | विवेच्य कहानी की घटनाएँ एक दिन की अवधि में अभय के घर, बस स्टैण्ड़, डूवा में घटित होती हैं | इस प्रकार विवेच्य कहानी में देश-काल -वातावरण का चित्रण सफलता से किया है |

4.8.5 **भाषा-शैली**:-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, आवेगपूर्ण है जिसमें शब्दाडम्बर कहीं भी नज़र नहीं आता |

ध्वन्यार्थक शब्द :-

अरे रे रेऽ, टक-टक आदि |

सार रुप :-

NIVH, DUWA, BRA आदि |

अंग्रेजी शब्द :-

आर्टस् फैकल्टी, रीड़िंग, वी.सी., बी.एड. आदि |

इन शब्दों के प्रयोग से कहानी में रोचकता आ गई हैं |

प्रश्नोत्तर शैली :-

विवेच्य कहानी में ' प्रश्नोत्तर शैली ' का प्रयोग किया है | इसके माध्यम से पाठकों के मन में अभिरुचि उत्पन्न की जाती है | कहानी में आकर्षण निर्माण होता है |

" एक महिला - क्या नाम है ?

मंजरी - ' मंजरी '

एक महिला - हां मंजरी, आपको रीड़िंग करवानी है या रिकॉर्ड़िंग ?

मंजरी - मैम, पहले तो रीड़िंग करवानी है " [21]

प्रस्तुत शैली से कथानक का विकास होता है पाठक प्रश्न और उसका उत्तर सुनने के लिए उत्सुक होते हैं |

4.8.6 <u>उद्देश्य</u> :-

विवेच्य कहानी द्वारा दृष्टिहीन लोगों की मानसिकता, समाज का उनके प्रति व्यवहार, सरकार की नीति इन बातों पर प्रकाश ड़ालने का कार्य किया है |

4.9 " **खैरियत है** "

4.9.1 **कथावस्तुः-**

' विजय ' द्वारा लिखित ' खैरियत है ' कहानी में मजहब के कारण आतंक छा जाता है | पुलिस को अमन निर्माण करने के लिए पूरे पाँच दिनों बाद कामयाबी मिलती है | पुलिस ' जावेद ' के घर आने पर उनकी पत्नी ' जरीना ' अपने बेटे को ' खैरियत होने ' का समाचार बताती है | तो जावेद विचार करते हैं , दंगे से प्रभावित जनता ' खैरियत है ' यह शब्द कभी कह नहीं पायेगीं |

4.9.2 **चरित्र -चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

<u>जावेद अली</u> :- जावेद ईमानदार पुलिस, सहनशील, संवेदनशील, फर्ज के प्रति वफादार, कूटनीति को जाननेवाले के रुप में चित्रित हैं |

<u>मंसूर मियां</u> :- मंसूर मियां बूढ़े , जातिभेद न माननेवाले, बहू को बेटी की तरह माननेवाले, उचित ढ़ंग से कर्तव्यों को पूरा करनेवाले नेक इंसान, दंगे से प्रभावित शोषित व्यक्ति के रुप में चित्रित हैं |

गौण पात्र :-

विवेच्य कहानी में मंसूर जी की पत्नी, उनकी बहू सुरैय्या , दूकानदार रफीक , सतीश अरोरा, जावेद की पत्नी जरीना ये गौण पात्र हैं | जो कथानक को गति देने में सहायक हुए हैं |

4.9.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद मार्मिक, घटनाओं ,परिस्थितियों का बयान करनेवाले,अर्थपूर्ण हैं | दंगे से प्रभावित मंसूर की पत्नी कहती है, " जावेद : हमें अफसोस हैं कि ...मगर हम गुंडों को छोड़ेंगे नहीं जिन्होंने आपको उजाड़ा है.

मेहरु : अल्लाह या भगवान का नाम गुंड़ों के ताबीज में बंद हो गए हैं ये नाम! उन्होंने तो हिंदुओं को बेची थी दुकान. फिर हिंदू ही क्यों उनके जिस्म को गोदकर चले गए ? और सुरैया ... उसे तो अल्लाह के बंदे ही उठा ले गए. मैं बची हूँ ! बोलो, गोली मारोगे या कपड़े उतारुँ ! " [22]

विवेच्य कहानी के संवाद सजीव, आकर्षक, कौतुहल जगानेवाले, प्रभावशाली हैं |

4.9.4 **देश -काल -वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में सांप्रदायिक दंगे के वातावरण का चित्रण किया है | कहानी की घटनाएँ नाना - नाती घटिया, पूरा शहर , जरीना का घर इन स्थानों पर छः दिन की अवधि में घटित होती हैं | इस प्रकार देश -काल -वातावरण की अन्विति करने में लेखक को सफलता मिली हैं |

4.9.5 **भाषा -शैली :-**

विवेच्य कहानी की भाषा में शब्द योजना, वाक्य -विन्यास आदि गुण आते हैं |

उर्दू -फारसी शब्द :-

अस्मत, लिहाज, तहजीब, ताबीज, मुल्क, सियासत, अल्फाज आदि |

अंग्रेजी शब्द :-

लीडर्स, इलैक्शन, डेवलपमेन्ट, अपोजीशन, कन्फेक्शनरी आदि |

मुहावरा :-

1. दिन में तारे दिखाना (खैरियत है, पृ.57)

विवेच्य कहानी में ' पूर्वदीप्ति शैली ' का प्रयोग हुआ है | विवेच्य कहानी में स्मृति तरंगों के रुप में घटनाओं का वर्णन किया हैं | जैसे - कहानी में ' जावेद ' को सपने में दंगे के दिनों की घटनाएँ याद आती हैं | ' पूर्वदीप्ति ' शैली के माध्यम से तत्कालीन भाव बोध का तीव्र संवेग दृष्टव्य हैं |

4.9.6 **उद्देश्य** :-

विवेच्य कहानी द्वारा लेखक ने दंगे के दुष्परिणाम दिखाकर, दंगे निर्माण न हो यह संदेश उद्देश्य द्वारा दिया है |

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

4.10 **त्रिकोण** :

4.10.1 **कथावस्तु** :

' राजीव सिंह ' द्वारा लिखित ' त्रिकोण ' कहानी का नायक ' मुकुल ' के माँ-बाप, चारित्र्यहीन हैं, उसकी प्रेमिका ' ऋचा ' उसे प्रेम में धोखा देती है | अतः अपनों से धोखा खाया हुआ ' मुकुल ' एक संस्था में बच्चों की परवरिश करने लगता है | वहाँ ' जैसमिन ' उसे अपना ' पिता ' मानने लगती है | मुकुल भी जैसमिन को जीवन की सारी खुशियाँ मिले, यह कामना करता है |

4.10.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :

प्रमुख पात्र :

मुकुल : विवेच्य कहानी में बेटा, प्रेमी और पिता की भूमिका में चित्रित हैं |

गौण पात्र :

विवेच्य कहानी में मुकुल के अभिभावक, उसकी प्रेमिका ऋचा, जैसमिन आदि गौण पात्र प्रसंगानुकूल चित्रित हैं |

4.10.3 **कथोपकथन** :

विवेच्य कहानी के संवाद संक्षिप्त हैं | जैसे -

" जैसमिन - दादा !

मुकुल - हां, बोलो.

जैसमिन - जल्दी आना.

मुकुल - हां, जल्दी आऊँगा | " [23]

इस प्रकार विवेच्य कहानी के संवाद संक्षिप्त, स्वाभाविक हैं | जिससे कहानी रोचक बनी है |

4.10.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी की घटनाएँ मुकुल के पिता के घर, मुकुल जिस संस्था में काम करता है, वहाँ घटित होती हैं | कहानी में अनाथ बच्चों की संस्था के वातावरण का चित्रण है |

4.10.5 **भाषा - शैली** :

विवेच्य कहानी की भाषा सरल है, प्रवाहमयी है, आस्वाद में भाषा सहायक है | क्लिष्ट शब्दों का वर्णन इसमें नहीं हैं |

मुहावरे :

1. स्वांग करना | (त्रिकोण, पृ.63)

2. गला भर आना | (' वही ' पृ.63)

विवेच्य कहानी की शैली ' कथात्मक ' है, जो सीधी, सरल है |

4.10.6. **उद्देश्य** :

अच्छे और बुरे लोग हमारे परिवेश में पल - पल हमें मिलते रहते हैं ; इस पक्ष पर प्रकाश ड़ालना कहानी का प्रतिपाद्य रहा है |

4.11 **तैंतीस परसेंट** :

4.11.1 **कथावस्तु** :

' नीलिमा सिन्हा ' द्वारा लिखित ' तैंतीस परसेंट ' कहानी में कुछ महिलाएँ चुनाव जीतकर अपने - अपने प्रदेश की जिला-अध्यक्ष बन गई हैं | जो अपनी गृहस्थी के सिवा एक अलग वजूद से प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुकी हैं | वे प्रदेश कार्यालय आती हैं और वहाँ एक - दूसरे के साथ बातें करती हैं | इस तरह महिलाओं की प्रवृत्ति, स्वभाव, वजूद इस पक्ष पर प्रकाश ड़ालना कहानी का आधार है |

4.11.2 **चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र

नीरा चौधरी : नीरा मातृत्व का हक़ छीन जानेवाली, अमीर व्यक्ति की पत्नी, जिला - अध्यक्ष के रूप में चित्रित है |

रूचि : रूचि पतिव्रता, राजनीति से अनभिज्ञ, मिलनसार, जिला - अध्यक्ष के रूप में चित्रित है |

गौण पात्र :-

विवेच्य कहानी में भगवानो देवी, शाहीन, निशा, सरस्वती, सुमित्रा, अरूणा, दीपशिखा ये गौण पात्र चित्रित हैं | इनमें से कुछ अनपढ़, गँवार, कुछ पात्र अनुभवी, कुछ सुझाव देनेवाले, कुछ मजाक उड़ानेवाले हैं | ये कथानक को गति देने में सहायक बने हैं |

4.11.3. **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल हैं | जैसे -

" दीपशिखा : आशिक मिजाजी में तो तुम मर्दों को भी मात करती हो !... और सुनाओ ! क्या हाल - चाल है ?

अरूणा : हाल की तो आप देख रही है, बेहाल है ; और ' चाल ' को तो ठीक - ठाक रहना ही है इस राजनीति में चाल बिगड़ी तो समझिए कि कुत्तों से भी बुरी गत बनेगी | " [24]

विवेच्य कहानी के संवाद आकर्षक, रोचक और पात्रों का चरित्र - चित्रण करने में सहायक सिद्ध हुए हैं |

4.11.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में राजनीतिक वातावरण का चित्रण किया है | पूरी कहानी प्रदेश कार्यालय में एक दिन की अवधि में घटित होती हैं | इस तरह विवेच्य कहानो देश - काल - वातावरण का चित्रण करने में सफल बनी हैं |

4.11.5 **भाषा शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा पात्रानुकूल हैं | दलित महिला भगवानो देवी की भाषा बिहारी है | जैसे -

" भगवानो देवी : पईसा - रोपेया इहां किसको ना सोहाता है ? ... से ही उ कहिस कि माय रे आइसने कर जईसन महेन्दर बाबू कहता है ." [25]

पुनरुक्तिवाले शब्द :

ठक - ठक, हलो - हलो, बैठल - बैठल, आईए - आईए, आदि |

ध्वन्यार्थक शब्द :

दुर्रss, ठक - ठक, हलो - हलो आदि |

शब्द योजना :

नेहर - ससुराल, दाम - कौड़ी, कद - काठी, सौम्य - सुंदर, गांव - गवई, आदि |

विवेच्य कहानी की शैली ' कथात्मक ' है | लेखिका कहानी बताती है जो सीधी, स्पष्ट है | संवाद पात्रानुकूल हैं |

4.11.6 **उद्देश्य** :-

विवेच्य कहानी द्वारा लिखिका ने ' तैंतीस परसेंट ' आरक्षण के तहत् महिलाओं को दलित वर्ग तथा गृहस्थी से बाहर निकलने का सम्मान प्राप्त होगा; वे अपना वजूद निर्माण कर सकेगी यह उद्देश्य बताया हैं |

4.12 **शोकगीत**

4.12.1 **कथावस्तु** :-

' कुणाल सिंह ' द्वारा लिखित ' शोकगीत ' कहानी के कुणाल और मेहंदीरत्ता को नौकरी से अचानक निकाला गया हैं | लेकिन ये बात उन दोनों ने अपने घरवालों को बतायी नहीं हैं | वे नौकरी ढूँढ़ रहे हैं, जिसमें काफी समय बीत चुका है |

4.12.2 **चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

कुणाल : कुणाल बेकार शरारती, आवारा, व्यसन करनेवाला है | लेकिन बुरा व्यवहार करने पर जब उसका मन उसे फटकारता है तब वह सच्चाई को कबूल करता है, इस रूप में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में मेहंदीरत्ता, इंद्रलिपि चैटर्जी ये गौण पात्र चित्रित हैं, जो प्रसंगानुकूल आए हैं |

4.12.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद चुटीले, रोचक, संक्षिप्त हैं | जो कथानक को गति प्रदान करते हैं | कहानी के संवाद फोन पर ही चित्रित हैं | जैसे - " इंद्रलिपि - हलो गुड मॉर्निंग सर.

कुणाल - क्यों मेरी सुबह खराब कर दी तुमने

इंद्रलिपि - अब तो हर सुबह खराब होगी मिस्टर शादी जो ...

कुणाल - आ जाओ, तुम्हीं यहाँ जो बनाना है बनाओ |

इंद्रलिपि - ठीक, मैं ही आऊँ. अं. अप्रॉक्स नाईन थर्टी.

कुणाल - ओके बाई. " [26]

4.12.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में महानगरीय वातावरण का चित्रण किया है | स्थल - विक्टोरिया मेमोरियल हाउस के सामने, कुणाल का कमरा इनमें कहानी की घटनाएँ घटित होती हैं |

4.12.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल है, क्लिष्ट भाषा का प्रयोग कहानी में नहीं हैं | साधारण बोलचाल में प्रयुक्त हिंदी भाषा का प्रयोग विवेच्य कहानी में किया गया है |

अंग्रेजी शब्द :

लिफ्ट, कौन्ट्रेक्ट, गारमेंट, शोरुम, मल्टीप्लेक्स, ब्वायफ्रेंड, वाच आदि |

विवेच्य कहानी में ' कथात्मक ' अर्थात् ' किस्सागोई ढ़ंग ' का प्रयोग किया गया है | लेखक कहानी बताता है | विवेच्य कहानी सीधी, सरल, सपाट बयानी शैली में लिखी गई हैं |

4.12. <u>उद्देश्य</u> :-

कौन्ट्रेक्ट के तौर पर दी जानेवाली नौकरी के कारण बेकार होने का खतरा होता है, यह उद्देश्य विवेच्य कहानी में बताया है |

4.13 **<u>खजांची</u>**

4.13.1 **<u>कथावस्तु</u>** :-

' क्रांति देव ' द्वारा लिखित ' खजांची ' कहानी में ' अंतर्जातीय प्रेम विवाह ' इस विषय को लेकर शहर में अचानक हत्याओं का सिलसिला शुरू होता है | इस स्थिति पर पुलिस द्वारा काबू मिलने पर ' राशन बँटवाई ' के समय ' खजांची ' घर में बीमार माँ और पिता शहर से घर नहीं लौटे हैं इसलिए राशन माँगने आता है | बचपन में कर्तव्य पूर्ति की आकांक्षा देखकर ' खजांची ' से पुलिस ' माथुर ' प्रभावित होते हैं | अतः बार - बार उसके बारे में विचार करते हैं |

4.13.2 **<u>पात्र चरित्र - चित्रण</u>** :-

<u>प्रमुख पात्र</u> :-

<u>खजांची</u> :- खजांची गरीब, आज्ञाकारी बेटा, हक़ के लिए लड़नेवाला इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

<u>माथुर</u> :- माथुर ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, दयावान, फर्ज को अति महत्त्व देनेवाले पुलिस के रूप में नज़र आते हैं |

<u>गौण पात्र</u> :- विवेच्य कहानी में नौकर संकटा, माथुर की पत्नी, उनके बेटे ये गौण पात्र चित्रित हैं | जो प्रसंगानुकूल कथानक को गति प्रदान करने में सहायक हुए हैं |

4.13.3 **<u>कथोपकथन</u>** :-

विवेच्य कहानी के संवाद पात्रों का चरित्र - चित्रण करनेवाले हैं | जैसे - " खजांची - सरकार, बाबू दस दिन से घर नहीं आया है और माई ताप में पड़ी है. कहती है, घर में तू ही तो एक मर्द है. जा तू ही राशन ले आ.

माथुर : तुम्हारा नाम क्या है ?

खजांची : खजांची.

माथुर : तुम्हें खजांची का मतलब पता है ?

खजांची : उ हूं. "[27]

विवेच्य कहानी के संवाद सरल, आकर्षक, प्रभावी हैं। जिससे कहानी सुंदर बन पड़ी हैं।

4.13.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में दंगे के वातावरण का चित्रण किया है | पूरी कहानी शहर में महरी टोला, हरिजन बस्ती, पुलिया, माथुर का कैंप, उसका घर इन स्थलों पर घटित होती हैं |

4.13.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक, प्रभावी है | यह पात्रानुकूल एवं परिस्थितिनुकूल हैं |

मुहावरा :-

1. टस से मस न होना (" खजांची " पृ.58)

विवेच्य कहानी में पात्र अनुचित बातों से उत्तेजित होकर आवेश में आकर बातें करते हैं, अतः ' आवेगपूर्ण शैली ' का प्रयोग किया गया है | जैसे माथुर अपने बेटों से बहस करते समय कहते हैं, " मैं खतरनाक जगहों पर निर्भीक जाता हूँ तो क्या मैं ब्रेनलेस हूँ." [28] प्रस्तुत शैली से कौतुहल निर्माण होता है |

4.13.6 **उद्देश्य** :-

आतंक के कारण जनता पुलिस की मदद् करने में हिचकिचाती है, यह उद्देश्य प्रतिपादन में लेखिका को सफलता मिली है |

4.14 **दावा**

4.14.1 **कथावस्तु** :-

' प्रियंवद ' द्वारा लिखित ' दावा ' कहानी का नायक प्रेम में असफल होने पर विवाह ही नहीं करता | माँ की मृत्यु के उपरांत अकेला जीवन यापन करता है | गिलहरी के बच्चे को पालना चाहता है, पर उसकी भी मृत्यु होती है |

4.14.2 **चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

बेटा - बेटा माँ का लाड़ला, सच्चा प्रेमी, शराबी इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

गौण पात्र - विवेच्य कहानी में बेटे की माँ, उसकी प्रेमिका ये ' गौण पात्र ' कहानी को प्रवाही बनाने में सहायक हुए हैं |

4.14.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद पात्रों का चरित्र - चित्रण करते हैं | बेटा शराब पीकर घर आने पर उसकी माँ कहती हैं - " माँ - तुम्हें पित्त चढ़ गया है ... मैं कुछ लाती हूँ. तुम किसी लड़की से दोस्ती कर लो.

बेटा - (माँ को प्रेमिका से मिलाकर) इसकी शादी हो रही है. दस महीने बाद. हम पुराने दोस्त हैं . " [29]

विवेच्य कहानी के संवाद भावप्रधान, संक्षिप्त, रोचक बने हैं |

4.14.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में पारिवारिक वातावरण का चित्रण किया है | पूरी कहानी नायक के कमरे में घटित होती है |

4.14.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा भावप्रधान, मार्मिक एवं अर्थपूर्ण हैं |

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

विरूद्ध अर्थवाले शब्द :-

पाप - पुण्य, ग्राहय - त्याज्य, नैतिक - अनैतिक आदि |

विवेच्य कहानी ' प्रथम पुरूष एकवचन ' में लिखी गई है अतः इसमें ' आत्मकथात्मक शैली ' का प्रयोग किया गया है |

4.14.6 **उद्देश्य** :-

विवेच्य कहानी द्वारा असफल प्रेम और उससे उत्पन्न सच्चे प्रेम की कसौटी यही उद्देश्य लेखक ने प्रतिपादित किया है |

4.15 घर चलते हैं डार्लिंग

4.15.1 **कथावस्तु** :-

' नमिता सिंह ' द्वारा लिखित विवेच्य कहानी की प्राध्यापिका नीरजा अपने छात्र आलोक द्वारा लिखित उपन्यास का संशोधन करके संपादन करती हैं | आलोक की मृत्यु हो चुकी हैं अतः वह उसके अभिभावकों को प्रथम पुण्यस्मरण पर उपन्यास प्रकाशित करने का सुझाव देती है | जिसे आलोक के अभिभावक सुझाव मान कर किताब का प्रकाशन करते हैं |

4.15.2 **पात्र - चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

नीरजा : नीरजा आदर्श प्राध्यापिका, माँ, संवेदनशील नारी के रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित हैं |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में आलोक के माता - पिता, नीरजा के पति ये गौण पात्र चित्रित हैं, जो प्रसंगानुकूल कहानी को गति देने में सहायक हुए हैं |

4.15.3 **कथोपकथन** :-

कथानक को गति देनेवाले संवाद

जैसे - " आलोक के पिता - देखिए तो भाभीजी ! कल मुन्ना की अलमारी के सबसे ऊपर के खाने में यह फाइल मिली |

नीरजा - भाई साहब, फाइल दे दीजिए. प्रेम कहानियाँ, जोश और आदर्श की कविताएँ होंगी.

इस उम्र में हर चीज एक नए रंग में दिखती हैं. छोटी - छोटी बातों के नए अर्थ समझ आने लगते हैं. " [30]

विवेच्य संवादों से भविष्य की घटनाओं को उत्सुकता से जानने हेतु पाठक प्रोत्साहित होते हैं | कथानक को गति मिलती हैं | पाठक अद्यांन्त उसे पढ़ते है |

4.15.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में पुस्तक प्रकाशन समारोह के वातावरण का चित्रण किया है | पूरी कहानी नीरजा के घर और सूचना केंद्र के हॉल में एक दिन की अवधि में घटित होती हैं |

4.15.5. **भाषा - शैली** :-

ध्वन्यार्थक शब्द : धिक् - धिक् - धिक्, टिक - टिक - टिक, चिक - चिक - चिक |

पुनरूक्तिवाले शब्द :-

बार - बार , बीच - बीच, कभी - कभी, मोटा - मोटा, क्या - क्या, आदि |

अंग्रेजी शब्द :-

अनॉटमी, हायबरनेशन, साइंस, बर्थ डे, ब्युटी - कंटेस्ट, आदि |

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, विचारप्रधान है |

विवेच्य कहानी में ' वर्णनात्मक शैली ' के दर्शन होते हैं | कहानी की नायिका प्राध्यपिका है अतः कहानी के अनुकूल गहन विचारों का समावेश है | विवेच्य कहानी में दार्शनिक बातों का पुट दृष्टव्य हैं |

4.15.6 **उद्देश्य** :-

विवेच्य कहानी का उद्देश्य है - प्राध्यापिका हमेशा अपने छात्रों के उत्थान हेतु कार्यरत रहती हैं |

4.16 तीसरी सुरंग

4.16.1 कथावस्तु :-

' मुकेश वर्मा ' द्वारा लिखित ' सुरंग ' कहानी के नायक की पत्नी की अचानक मृत्यु होती है | वह बेटे को अच्छी तरह से सँभालता है | नायक पचास वर्ष का होने के उपरांत उसके जीवन में दूसरी स्त्री आती है जिससे समाज के ड़र से वह विवाह नहीं कर पाता | बेटा बड़ा होने पर नौकरी हेतु दूर शहर चला जाता है |

4.16.2 पात्र चरित्र - चित्रण :-

प्रमुख पात्र :-

नायक : नायक अच्छा पति, अच्छा पिता, अच्छा प्रेमी इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित हैं |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में नायक की पत्नी, उसका बेटा, नायक की दूसरी औरत ये गौण पात्र प्रसंगानुकूल चित्रित हैं |

4.16.3 कथोपकथन :-

विवेच्य कहानी वर्णनात्मक शैली में होने के कारण कथोपकथन का अभाव दिखाई देता हैं |

4.16.4 देश - काल - वातावरण :-

विवेच्य कहानी नायक का घर, पब्लिक स्कूल का होस्टल, रेल जंक्शन पर घटित होती है | कहानी में महानगरीय परिवेश का चित्रण किया है |

4.16.5 भाषा - शैली :-

पुनरूक्तिवाले शब्द :-

कभी - कभी, ठीक - ठीक, कहां - कहां, बार - बार, धीरे - धीरे, आदि |

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, बोधगम्य हैं |

विवेच्य कहानी ' मैं ' इस प्रथम पुरूष एकवचन में लिखी गई है | यहाँ ' आत्मकथात्मक शैली ' के दर्शन होते हैं |

4.16.6 **उद्देश्य** :-

विवेच्य कहानी द्वारा तनाव, संघर्ष, अंतर्द्वंद्व के कारण पिता - पुत्र में निर्माण हुआ पीढ़ियों का अंतर दर्शाया है |

4.17 **समरवंशी**

4.17.1 **कथावस्तु** :-

' सोहन शर्मा ' द्वारा लिखित ' समरवंशी ' कहानी शोषक पूँजीवादी व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठानेवाले नक्सलवादियों के जीवन पर आधारित हैं | आम जनता इनकी भूमिका समझ कर इनका साथ नहीं देती, यह इसकी कथावस्तु है |

4.17.2 **पात्र - चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

प्रसाद : प्रसाद नक्सलवादी, इरादों का पक्का, विचारी, साहसी, शूर, वीर, दूरदर्शित इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित हैं |

शंकर : शंकर नवयुवक, बातूनी, अपने कार्य के नियमों से अन्जान, गर्म जोशवाला, आज्ञाकारी के रूप में चित्रित हैं |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में खोकन, दीनू, मांझी ये गौण पात्र कथानक को गति प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुए हैं |

4.17.3 **कथोपकथन** :-

पात्रों का चरित्र - चित्रण करनेवाले :-

जैसे : " खोकन : बहुत सारे लोग ऐसे हैं जो ये मानते हैं कि जुल्म और शोषण को खत्म करने के लिए हिंसा का रास्ता ही एकमात्र रास्ता नहीं हैं .

प्रसाद : ऐसा कहनेवाले या तो इस आततायी सत्ता के दलाल हैं या फिर निहायत बेवकूफ." [31]

विवेच्य कहानी के संवाद रोचक, आवेशमयी, प्रभावी हैं |

4.17.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी की घटनाएँ बागानबाड़ी, बाज बैठका, तिश्टा नदी का तट, इन स्थलों पर एक दिन की अवधि में घटित होती है | विवेच्य कहानी में नक्सलवादियों के कार्यक्षेत्र का वातावरण चित्रित किया है |

4.17.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा गंभीर, उत्सुकतावर्धक हैं | इसकी भाषा इतनी सजीव है कि, शब्दों के माध्यम से पाठक के सामने चित्र निर्माण होता है |

मुहावरा :-

आलोचना करना | (समरवंशी, पृ.26)

विवेच्य कहानी में ' संवादात्मक शैली ' का प्रयोग किया है | संवादों के माध्यम से ही कहानी आगे बढ़ती हैं | हर समय पात्र एक - दूसरे से वार्तालाप करते हैं | संवादों के माध्यम से कहानी भावनाप्रधान होने के साथ पाठकों की उत्सुकता बढ़ाती हैं |

4.17.6 **उद्देश्य** :-

नक्सलवादियों की भूमिका जनता और पुलिस समझे, उन्हें न्याय मिले, अन्याय ख़त्म हो, यह उद्देश्य विवेच्य कहानी द्वारा बताया है |

4.18 **संस्कार** :- ' मायानंद मिश्र ' द्वारा लिखित ' संस्कार ' कहानी है |

4.18.1 **कथावस्तु** :-

प्राध्यापक अमृतनाथ जी के पूर्व छात्र ' धरणीधर ' अब विधायक हैं, ये शिक्षक - दिन पर भाषण लिखने के लिए प्राध्यापक से अनुनय करते हैं | अपने बेटे को सचिव की नौकरी दिलाने में ' धरणीधर ' की सहायता होगी इस उद्देश्य से प्राध्यापक भाषण लिखकर देते हैं | अपना काम संपन्न होने पर मंत्री प्राध्यापक जी से कोई संपर्क नहीं रखता |

4.18.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

धरणीधर : अवसरवादी राजनेता, काम होने तक चापूलूसी करनेवाला, संस्कारहीन मंत्री के रूप में विवेच्य कहानी में चित्रित हैं |

अमृतनाथ : अमृतनाथ विनम्र, अनुशासन प्रिय, सरल सीधे विचारोंवाले, नैतिक आदर्श पर चलनेवाले प्राध्यापक, अच्छे पति, अच्छे पिता, कर्तव्यदक्ष के रूपों में कहानी में चित्रित हैं |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में अमृतनाथ का बेटा, पत्नी, प्रिंसिपल ये गौण पात्र प्रसंगानुकूल चित्रित हैं |

4.18.3 **कथोपकथन** :

पात्रों का चरित्र - चित्रण करनेवाले कथोपकथन :-

जैसे - " प्रिंसिपल : लेकिन कॉलेज से धरणीधर को निकालना शायद संभव नहीं हो. मैं समझा दूँगा.

अमृतनाथ - मुझे सुपरिटेंडेंट पद से मुक्त कर दिया जाए.

प्रिंसिपल - आपको बहुत घाटा होगा ...

अमृतनाथ - चाहे जो भी घाटा हो सर या तो उसे निकालिए या मेरा रेजिग्नेशन स्वीकार कीजिए काइंड़ली." [32]

विवेच्य कथोपकथन से पाठक के मन में कौतूहल निर्माण होने के साथ जिज्ञासा बढ़ती हैं |

4.18.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में सामाजिक वातावरण का चित्रण किया है | विवेच्य कहानी राजनेता के घर, अमृतनाथ के घर और प्रिंसिपल के रूम आदि स्थानों पर चार दिन की अवधि में घटित होती है | जो देश - काल - वातावरण में सफल हुई है |

4.18.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा पात्रानुकूल है | अमृतनाथ जी के संवाद प्रौढ़ और विद्वत्तापूर्ण भाषा में लिखे गए हैं |

मुहावरे :

1. उम्मीदों पर पानी फिरना | (संस्कार, पृ.43)
2. अवाक् रह जाना | (वही, पृ.45)

विवेच्य कहानी में ' पूर्व-दीप्ति शैली ' का प्रयोग करते हुए लेखक ने धरणीधर छात्रावस्था में किस तरह उद्दंड था, ये बातें स्मृति तरंगों के रूप में चित्रित की हैं |

4.18.6 **उद्देश्य** :-

राजनीति के संस्कार हीन, अवसरवादी राजनेता की प्रवृत्ति को दर्शाना, विवेच्य कहानी का उद्देश्य है |

4.19 **बलात्कार**

4.19.1 **कथावस्तु** :-

' मुकेश कौशिक ' द्वारा लिखित ' बलात्कार ' कहानी के यात्री स्वार्थ के कारण अपने रेल के डिब्बे में एक महिला यात्री को प्रवेश नहीं देते | इससे गाड़ी के शुरू होने पर वह महिला पायदान पर खड़ी होती है पर थोड़ी देर बाद गाड़ी से गिर कर मर जाती है |

4.19.2 **चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

अन्नू के पापा :

पत्रकार अन्नू के पापा, संवेदनशील, परिवार का खयाल रखनेवाले, अनावश्यक बातों की ओर ध्यान न देनेवाले के रूप में विवेच्य कहानी में चित्रित है

गौण पात्र :

विवेच्य कहानी में अन्नू की माँ, दलित महिला ये गौण पात्र चित्रित है जो कथानक को गति देते हैं |

4.19.3 **कथोपकथन** :- विवेच्य कहानी में एक ही कथोपकथन है |

जैसे - " देहाती महिला : भइय्या, जरा दरवाजा खोल दो ना.

कुछ यात्री - भैणचो, भइय्या भी कह रही है और खोल दो भी कह रही है." [33]

विवेच्य संवाद पात्रानुकूल है | जो चरित्र - चित्रण करते हैं |

4.19.4 **देश - काल- वातावरण** :-

विवेच्य कहानी रेल के एक डिब्बे और मीरामार समुद्र तट इन स्थलों पर दो दिन की अवधि में घटित होती हैं | इस तरह रेल यात्रा का वातावरण विवेच्य कहानी में चित्रित है |

4.19.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, स्पष्ट है |

गालियों से युक्त भाषा - भैणचो |

अंग्रेजी शब्द : कम्पार्टमेण्ट, प्लीज, स्लिपिंग, वेटिंग, लिस्ट, इंटरनेशनल आदि |

विवेच्य कहानी ' में आत्मकथात्मक शैली ' का प्रयोग किया है | यह कहानी ' मैं ' बताता है, जो उसकी आप बीती है |

4.19.6 **उद्देश्य** :-

विवेच्य कहानी द्वारा स्वार्थांधता के कारण मानव अनजाने में दूसरों का हक़ जबरदस्ती छीन सकता है, यह उद्देश्य बताया है |

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

4.20 अनुजा

4.20.1 कथावस्तु :-

' अर्चना पैन्यूली ' द्‍वारा लिखित ' अनुजा ' कहानी की नायिका अनुजा डेनमार्क निवासी है | उसका पति स्थायी आवास का परमिट दिलाने का काम करता है | इस संदर्भ मे उनकी ग्राहक ' सपना ' अनुजा के पति की मृत्यु होने का फायदा उठाकर अनुजा की दौलत अपने नाम करती है, उसे धोखा देती है | इस हादसे से अनुजा अपनी सहेली ' सुधा ' के हौसले के कारण सँवरती है |

4.20.2 पात्र - चरित्र - चित्रण :-

प्रमुख पात्र :-

अनुजा - अनुजा होनहार छात्र, मैकेवालों की लाड़ली, नरेन्द्र की दूसरी पत्नी, पति के काम में साथ देनेवाली, धोखा खानेवाली, अनेक संकटों के बाद जिजीविषा रखनेवाली माँ के रूप में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

सुधा - सुधा धार्मिक, पतिव्रता, संतान प्रेमी, सच्ची दोस्त, मिलनसार, किसी की बातों में न आनेवाली, स्वयं के निर्णय स्वयं लेनेवाली के रूप में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

गौण पात्र - विवेच्य कहानी में अवैध काम करनेवाला नरेंद्र, धोखा देनेवाली सपना ये गौण पात्र प्रसंगानुकूल कहानी में चित्रित हैं |

4.20.3 कथोपकथन :-

कथानक को गति देनेवाले कथोपकथन :-

जैसे - " अनुजा - मैंने पहले तुम्हें यहां कभी नहीं देखा ?

सुधा - हां. सिर्फ दो ही महीने हुए हैं यहाँ आकर.

अनुजा - तुम इंड़िया में कहाँ से हो ?

सुधा - हैं तो हम हरिद्‍वार के ...

अनुजा - मै भी तो हरिद्‍वार की हूँ." [34]

विवेच्य संवाद कथानक को प्रवाही बनाने में सफल बने हैं |

4.20.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में विदेशी वातांवरण का चित्रण किया है | पूरी कहानी डेनमार्क स्थित भारतीय मंदिर, सुधा के घर और अनुजा के घर इन स्थलों पर घटित होती है |

4.20.5 **भाषा - शैली** :-

पुनरूक्तिवाले शब्द : टुकुर - टुकुर, दो - दो, कैसी - कैसी आदि |

अंग्रेजी शब्द : इंड़िया, रिसर्चर, शिपिंग कंपनी, होल्ड ऑन, क्लास, फर्स्ट फ्लोअर आदि |

विवेच्य शब्दों के प्रयोग से मधुरता एवं मिठास निर्माण हुई हैं |

विवेच्य कहानी में ' प्रश्नोत्तर शैली ' का प्रयोग किया है | इस शैली से पाठक की उत्सुकता बढ़ती है | इससे पात्रों का चरित्र - चित्रण, उनके मनोभावों का चित्रण किया गया है |

4.20.6 **उद्देश्य** :-

सच्ची दोस्ती के कारण व्यक्ति अनेक संकटों से गुजरते हुए अदम्य शक्ति के साथ जीवन जीने की इच्छा रखता है, यह उद्देश्य विवेच्य कहानी द्वारा बतायां है |

4.21 **कंठ फटी बासुरी**

4.21.1 **कथावस्तु** :-

' रामेश्वर द्विवेदी ' द्वारा लिखित ' कंठ फटी बासुरी ' कहानी उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर किये जानेवाले अत्याचार पर आधारित है | जिसका शिकार नायक ' कान्ह ' होता है | वह जुल्म के खिलाफ आवाज उठाता है | अपने बल के द्वारा न्याय पाता है |

4.21.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

कान्ह - कान्ह गरीब किसान, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, गुस्सैल स्वभाव का, न्याय मिलने हेतु कोशिश करनेवाला, ड़कैत का साथी आदि रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

कान्ह की पत्नी - यह पतिव्रता नारी, अन्याय के खिलाफ लड़नेवाली, प्रेरणादायी नारी के रूप

में विवेच्य कहानी मे चित्रित है |

गौण पात्र - विवेच्य कहानी में सुरमी, सुल्तनवां, उसकी माँ रामायनी, उसके पिता बिजली दुबे, राजेंद्र पासवान ये गौण पात्र चित्रित हैं, जो कथावस्तु को प्रभावी बनाने में सहायक बने हैं |

4.21.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद पात्रानुकूल हैं | जैसे -

" राजेंद्र पासवान - हम डाकू दिख रहे हैं तोरा ?

कान्ह की पत्नी - त का फरक है ? डाकू सरकारी वर्दी पहन लिहिस है |

राजेंद्र - अच्छा ! त अपने बाप से न पूछती, कान्ह से कि कइसे करता है भाग - भाग के डकैती ? " [35]

विवेच्य संवाद गाँव की बोलचाल की भाषा में है, जो आकर्षक, सजीव एवं अर्थपूर्ण प्रतीत दिखाई देते |

4.21.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी कान्ह के घर, डी.एस.पी. के कार्यालय के आँगन में और बिजली दुबे के घर इन स्थलों पर घटित होती है | विवेच्य कहानी में ग्राम्य वातावरण का चित्रण मिलता है |

4.21.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा बिहारी हैं जो भावाभिव्यक्ति में समर्थता को प्रकट करती है |

गालियों से युक्त भाषा का प्रयोग - साले, दोगला, नगरनट्टिन, कुतिया, करमकोढ़ी आदि |

मुहावरें - 1. अग्नि - परीक्षा देना | (कंठ फटी बासुरी, पृ.23)

2. नींद - चैन हराम करना | (वही - पृ.12)

कहावतें - 1. चोर - चोर मौसेरा भाई (कंठ फटी बासुरी, पृ.14)

2. दूध का दूध पानी का पानी करना (वही, पृ.14)

3. विनाश काले विपरीत बुद्धि : (वही, पृ.14)

4. दूर के ढ़ोल सुहाने लगना (वही, पृ.24)

विवेच्य कहानी की भाषा में रोचकता दृष्टव्य होती हैं | विवेच्य कहानी कथात्मक शैली में लिखी गई हैं |

4.21.6 <u>उद्देश्य</u> :-

विवेच्य कहानी द्वारा गाँव का गुंड़ाराज, शोषितों की दीन अवस्था और आम जनता का अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना यह उद्देश्य प्रतिपादित किया है |

4.22 **<u>ड्रैकुला</u>**

4.22.1 **<u>कथावस्तु</u>** :-

' मुशर्रफ आलम जौकी ' द्वारा लिखित ' ड्रैकुला ' कहानी की नायिका ' सोफिया ' को ' ड्रैकुला ' उसे नोचता है यह भ्रम होता है | वास्तव में उसे विवाह तय न हो पाने का दु:ख है; जब वह आत्मविश्वास के साथ अपने दिमाग में बसा ' ड्रैकुला ' का भ्रम निकालती है तो वह खुशहाल जीवन जीती है |

4.22.2 **<u>पात्र चरित्र - चित्रण</u>** :-

<u>प्रमुख पात्र</u> :-

<u>सोफिया</u> - सोफिया के निड़र आत्मविश्वासी, किसी भी बात का सामना कर सकनेवाली इन चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश ड़ाला गया है |

<u>सुरैय्या</u> - सुरैय्या प्रेम - विवाह करनेवाली, अच्छी माँ, पतिव्रता नारी, अच्छी बड़ी बहन के रूप में चित्रित है |

<u>गौण पात्र</u> - विवेच्य कहानी में नादिर, अशरफ ये गौण पात्र कथानक को गति देने में सहायक सिद्ध हुए हैं |

4.22.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद परिस्थितिनुकूल हैं | जैसे-

" लेखक - उफ्फ़. ड़रावना सपना, लेकिन इस शताब्दि में ' ड्रैकुला ' ? आप किताबें बहुत पढ़ती हैं, ड़रावनी किताबें ?

सोफिया - नहीं पढ़ती.

लेखक - फिर ये सपना.

सोफिया - नहीं, ये सपना नहीं है, देखिए ... " [36]

विवेच्य संवाद कौतुहलता, जिज्ञासा और उत्सुकता को निरंतर बढ़ाते हैं |

4.22.4 **देश- काल- वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में मुस्लिम पारिवारिक वातावरण का चित्रण किया है | विवेच्य कहानी सोफिया की जीजी और भाई नादिर के घर घटित होती है | समय के बारे में संकेत है, " इस कहानी का आरंभ जनवरी महीना की 8 तारीख से होता हैं |" [37] इस तरह देश - काल - वातावरण का निर्वाह करने में यह सफल बनी हैं |

4.22.5 **भाषा - शैली** :-

उर्दू शब्द : खौफ़नाक, गुफ्तुगू, शौहर, नाखुशगवार, काबलियत, कम अज कम आदि |

मुहावरे : 1. नाक कटाना; (ड्रैकुला पृ.54)

2. किस्मत का तारा होना; (वही, पृ.57)

अंग्रेजी शब्द : हाइपरटेंशन, बायो डाटा, कम्प्युटर, इन डिसेंट प्रोपोजल आदि |

पुनरुक्तिवाले शब्द : गोल - गोल, तेज - तेज, नई - नई, हँसी - हँसी, चीख़ते - चीख़ते आदि |

विवेच्य कहानी की भाषा शब्दों से रोचक बनी हैं |

विवेच्य कहानी में लेखक ने ' बयान पद्धति ' का प्रयोग किया है |

4.22.6 <u>उद्देश्य</u> :-

आत्मविश्वास के कारण व्यक्ति निड़र बनती है | यह विवेच्य कहानी का उद्देश्य है |

4.23 **<u>लेफ्टिनंट हॉडसन</u>**

4.23.1. **<u>कथावस्तु</u>** :-

रत्नेश्वर द्वारा लिखित ' लेफ्टिनंट हॉडसन ' कहानी में अंग्रेज अधिकारी द्वारा मजदूरों पर किये गए शोषण और जुल्म का चित्रण किया है | शोषित मजदूरों के कंकाल ' बाबा कन्स्ट्रक्शन ' वालों के फ्लैट बनाने की जमीन पर मिलते हैं | अतः मजदूरों द्वारा कंकाल मिली जमीन पर भगदड़ मचती हैं | विवेच्य कहानी का आरंभ आकर्षक है |

4.23.2 **<u>पात्र चरित्र - चित्रण</u>** :-

<u>प्रमुख पात्र</u> :-

<u>संपूर्ण</u> : संपूर्ण अभियंता, होनहार, प्रसंगों का ड़टकर सामना करनेवाले के रूप में चित्रित है |

<u>दीया</u> : दीया पतिव्रता नारी, इतिहास रिसर्चर के रूप में चित्रित है |

<u>गौण पात्र</u> : विवेच्य कहानी में मैनेजर राधे, रमेश, फोरेसिक साइंस लेबोरेटरीज के शास्त्रज्ञ, डॉक्टर आदि गौण पात्र प्रसंगानुकूल चित्रित हैं |

4.23.3 **<u>कथोपकथन</u>** :-

विवेच्य कहानी में परिस्थितिनुकूल छोटे और बड़े सवांद दिए हैं | जैसे -

" रमेश - सर, यहाँ जमीन के पास अजीब - सी स्थिति है |

संपूर्ण - क्या हुआ ?

रमेश - यहाँ हजारों की संख्या में मजदूर पहुँचे हुए हैं ... कई लोग इस तरह रो रहे हैं जैसे उनके बाप मर गए हों ... " [38]

विवेच्य संवाद कहानी में घटित घटनाओं का बयान करते हैं |

4.23.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में जमीन की खुदाई के समय कंकाल मिलने की सनसनीखेज खबर के कारण निर्माण हुए वातावरण का चित्रण किया है | विवेच्य कहानी कंकाल मिली जमीन और अस्पताल इन स्थानों पर दो दिन की अवधि में घटित हुई है |

4.23.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा प्रसंगानुकूल है, सुबोध एवं स्पष्ट है |

शब्द योजना : झार - पोछकर, नर - कंकाल, पांच - सात आदि |

अंग्रेजी शब्द : ओस्टियोमालायसिस, डी.एन.ए., केमिकल, रेडियेसन्स, फोरेसिक साइंस |

विवेच्य कहानी में पुनरुक्तिवाले शब्दों का भी प्रयोग किया गया है | इन शब्दों से कहानी में रोचकता निर्माण हुई है |

विवेच्य कहानी में ' वर्णनात्मक शैली ' के दर्शन होते हैं | जिसमें इतिहास में घटित घटनाओं का वर्णन किया गया है |

4.2.6 **उद्देश्य** :-

विवेच्य कहानी का उद्देश्य इतिहास का दर्शन कराना है |

4.24 **शॉर्ट कट**

4.24.1 **कथावस्तु** :-

' गुलजार ' द्वारा लिखित ' शॉर्ट कट ' कहानी में तीन मित्र प्रयाग की यात्रा करते समय देखते हैं कि, तेजी से गाड़ी चलाने पर एक चालक की दुर्घटना में मृत्यु होती है | कथानक का अंत व्यंग्यपूर्ण है |

4.24.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

विवेच्य घटनाप्रधान कहानी में कोई भी केंद्रीय पात्र नहीं हैं |

भूशन, तरन और लेखक : ये तीनों दोस्त, यात्री, प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेनेवाले के रूप में चित्रित हैं |

वीर सिंह : वीर सिंह गाड़ी का चालक, हँसी- मिजाजवाला, पंजाबी व्यक्ति के रूप में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

4.24.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद सार्थक, मार्मिक हैं | जैसे -

" तीनों मित्र : वीर सिंह, इसी रास्ते से निकल चलते हैं, अगर उसकी पुरानी हेरलड जा सकती है तो हम भी पहुँच जाएँगे. अपनी तो जीप है.

वीर सिंह : उसकी पुरानी जोरु है सर जी और कोई पेसिंजर भी नहीं है. अपनी तो ... रास्ते ने एक धचका दिया तो ... " [39]

4.24.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में प्राकृतिक वातावरण का चित्रण किया है | विवेच्य कहानी में बानपुर जानेवाले रास्ते का चित्रण है; यह दो दिन की अवधि में घटित होती है |

4.24.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल है, इसमें पंजाबी भाषा का भी प्रयोग किया है | विवेच्य कहानी का शीर्षक ' अंग्रेजी ' है |

पुनरुक्तिवाले शब्द : धीरे-धीरे, बार-बार उछल-उछल आदि |

अंग्रेजी शब्द : शॉर्ट कट, एमेजरी, ड्राइवर आदि |

मुहावरा : बाज न आना (शॉर्ट कट, पृ.17)

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

विवेच्य कहानी में ' व्यंग्यात्मक शैली ' के दर्शन होते हैं जिससे कहानी रोचक, आकर्षक बनी है |

4.24.6 **उद्देश्य** :-

गाड़ी तेज रफ्तार से शॉर्ट कट के रास्ते से चलाने पर व्यक्ति दुर्घटना की शिकार होती है, यह उद्देश्य बताया है |

4.25 **इंतजार**

4.25.1 **कथावस्तु** :-

' कृष्ण बिहारी ' द्वारा लिखित ' इंतजार ' कहानी की नायिका चाची के पति तीन संतानों के जन्म के उपरांत अचानक कहीं चले जाते हैं | स्वाभिमानी चाची पति का इंतजार करते हुए अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करती रहती है |

कथानक का अंत पाठकों के हृदय को छू लेनेवाला है |

4.25.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

चाची : चाची हँसमुख, स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर, पतिव्रता नारी, परित्यक्ता नारी, वृद्ध अकेली नारी, माँ इन रूपों में चित्रित हैं |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में बापू और चाची की जेठानी ये गौण पात्र प्रसंगानुकूल कहानी के उद्देश्य को सफल बनाने में सहायक बने हैं |

4.25.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी में संवाद बहुत कम हैं, वे गाँव की बोलचाल की भाषा में हैं | जैसे -

" डॉक्टर - अब की काफी दिन पर दरशन भइल महाराज ...

बापू - चाची के देखे अइलीं बाबू साहब ... " [40]

विवेच्य कहानी के संवाद छोटे, आकर्षक, घटना का वर्णन करनेवाले हैं |

4.25.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में ' ग्रामीण वातावरण ' का चित्रण किया है |

4.25.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सुबोध, भावनाप्रधान है जो भावों की अभिव्यक्ति सार्थक करने में सफल हुई हैं |

शब्दों के विकृत रूप

सानी - पानी, साधु - वाधु |

मुहावरे - 1. मुकद्दर सिहरना (इंतजार, पृ.20)

2. दिल के घाव सूखना (वही, पृ.21)

अंग्रेजी शब्द : कंपाउंडर, रिवर्स, टेस्ट, ट्रायल, प्राइवेट आदि |

विवेच्य कहानी ' कथात्मक शैली ' में लिखी गई है |

4.25.6 **उद्देश्य :-**

विवेच्य कहानी द्वारा अनमेल विवाह, परित्यक्ता, वृद्धा अकेली नारी की समस्याओं को दर्शाना; यह उद्देश्य है |

4.26 **बेतरतीब**

4.26.1 **कथावस्तु** :-

' अल्पना मिश्र ' द्वारा लिखित ' बेतरतीब ' कहानी के नायक भगवतशरण अपनी पत्नी को इज्जत नहीं देते, निर्णयों में उनके सुझाव लेना या सुनना इन्हें पसंद नहीं | बेटियों को बेटे से गौण मानना, दोयम दर्जा देना यह कहानी की कथावस्तु है |

4.26.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :

भगवतशरण : माँ की बातो में आकर पत्नी को मारनेवाले पति, लिंगभेद माननेवाले, वृद्धावस्था में पत्नी द्वारा उपेक्षित इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित हैं |

<u>रत्ना</u> : रत्ना भगवतशरण की पत्नी, तीन बेटियों और एक बेटे की माँ, सास व पति द्वारा पीड़ित स्त्री, बुढ़ापे में बीमार रहनेवाली महिला के रूप में चित्रित है |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में तीन बेटियाँ, भगवतशरण की माँ आदि गौण पात्र है | जो कथानक को गति देने में सहायक हुए हैं |

4.26.3 **कथोपकथन** :-

<u>कथानक को गति देनेवाले संवाद</u> :-

जैसे - " बड़ी बेटी - पापा ! क्या हम रिश्तेदारों के भरोसे पढ़ेंगे ?

भगवतशरण - अभी नहीं. थोडा और समझदार हो जाओ. बारहवीं कर लो. फिर यही (विश्वविद्यालय) आओ. " [41]

विवेच्य संवाद संक्षिप्त एवं चरित्र - चित्रण करने में समर्थ बने हैं |

4.26.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी भगवतशरण के घर में घटित होती है | यह पारिवारिक वातावरण का चित्रण करनेवाली कहानी है |

4.26.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, सुबोध, सपाट बयानी है |

शब्दों के विकृत रूप : बंधन - वंधन, संस्था - वंस्था आदि |

कहावत : बंदर के हाथ नारियल (बेतरतीब, पृ.45)

पुनरुक्तिवाले शब्द : इतने - इतने, सोंधी - सोंधी, दिखाते - दिखाते, बार - बार, सीधे - सीधे आदि |

विवेच्य कहानी ' आत्मकथात्मक शैली ' में लिखी है जो आधुनिक युग की स्थिति का चित्रण करने में सफल बनी है |

4.26.6 **उद्देश्य** :-

' लिंगभेद ' की समस्या दर्शाना विवेच्य कहानी का उद्देश्य है |

4.27 **यही मुंबई है**

4.27.1 **कथानक** :-

' हरिश्चंद्र बर्णवाल ' द्वारा लिखित ' यही मुंबई है ' कहानी दृष्टिहीन महादेव इस बच्चे पर आधारित है |

4.27.2 **पात्र चरित्र - चित्रण**:-

प्रमुख पात्र :

महादेव : महादेव माँ का लाड़ला बेटा, दृष्टिहीन , गुंडों से ड़रनेवाला, माँ के कष्टों को जानकर दु:खी होनेवाले बेटे के रूप में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में महादेव का भाई अभिषेक, उसके पापा, उसके स्कूल के साथी आदि गौण पात्र कथानक को प्रवाही बनाने में सहायक बने हैं |

4.27.3 **कथोपकथन** :-

पात्रों का चरित्र - चित्रण करनेवाले संवाद

जैसे - " महादेव - ये गुफ़ा क्या होती है ?

मॅड़म - ये एक ऐसी जगह है जो चारों ओर से पत्थरों से घिरी होती है इसमें रोशनी नहीं होती ."[42]

विवेच्य संवाद पात्रों का चरित्र - चित्रण करने में सफल हुए हैं |

4.27.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में महानगरीय वातावरण का चित्रण किया है | विवेच्य कहानी महादेव के घर और रेल के एक बोगी में घटित होती है |

4.27.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सीधी, सरल है | कठिन शब्दों का प्रयोग कहानी में नहीं हुआ है | बालमनोविज्ञान पर आधारित यह कहानी बच्चों की भावुकता, कोमलता को अपनी भाषा द्वारा प्रकट करती हैं |

पुनरुक्तिवाले शब्द : बार - बार, पहुंचते - पहुंचते, धीरे - धीरे, जोर- जोर, जल्दी - जल्दी आदि |

बाल - सुलभ भाषा का प्रयोग करते हुए विवेच्य कहानी में बच्चों की जिज्ञासा प्रवृत्ति को दिखाने के लिए ' प्रश्नोत्तर शैली ' का प्रयोग किया है |

4.27.6 **उद्देश्य** :-

बच्चे अधिक से अधिक बातों को जानने - समझने हेतु सवाल पूछते हैं, यह विवेच्य कहानी का उद्देश्य है |

4.28 **कुण्ड़लिनी**

4.28.1 **कथावस्तु** :-

' मनोज कौशिक ' द्वारा लिखित ' कुण्ड़लिनी ' कहानी का नायक ' सदानंद ' मठ में कुण्ड़लिनी जगाने के उद्देश्य से आता है | किंतु प्रतिभा, प्रतिष्ठा पाने के लालच में मठाधिपति बन कर अनेक सुविधाओं का उपभोग लेता है | विवेच्य कथानक में घटनाओं का सुनियोजित विवरण प्रस्तुत है |

4.28.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :

सदानंद : सदानंद त्यागी, साधक, शिष्य, भजन करनेवाला, कीर्ति के लोभ में गुरू की मृत्यु का कारण बननेवाला, धूर्त, पाखंड़ी मठाधिपति इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में चेलाराम, मठाधिपति नित्यानंद आदि गौण पात्र चित्रित है, जो प्रसंगानुकूल कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए हैं |

4.28.3 **कथोपकथन** :-

कथानक को गति देनेवाले संवाद :

जैसे - " नित्यानंद - उठो भगत जी ! कहाँ से आए हो ?

सदानंद - महाराज ! अमरकंटक में निवास कर रहा था कि, एक रात भगवान स्वप्न दिए

कटरमाला आश्रम जाओ और महाराज जी की सेवा करो ! तब से भटक रहा हूँ.

नित्यानंद - हो का नाम है तुम्हारा ?

सदानंद - जी ! सदानंद - " [43]

विवेच्य कहानी के संवादों से कथानक कौन-सा मोड़ लेगा, यह पढ़ने के लिए पाठक, उत्सुक होते हैं |

4.28.5 :- **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी नरसिंह बाबा के आश्रम, नित्यानंद के मठ में घटित होती है | जिससे समय का उचित मात्रा में पता नहीं चलता | विवेच्य कहानी में धार्मिक वातावरण चित्रित किया है |

4.28.5 **भाषा व शैली :-**

विवेच्य कहानी की भाषा सुबोध, पात्रानुकूल प्रसंगानुकूल हैं |

धार्मिक शब्द : ध्यानावस्था, कुण्ड़लिनी, मूलाधार चक्र, आदिम शक्तिपीठ आदि |

ध्वन्यार्थक शब्द : चट्टा, चप्प - चप्प आदि |

मुहावरें : 1. फूला न समाना (कुण्ड़लिनी, पृ.70)

2. हाथ धोकर पीछे पड़ना (वही, पृ.70)

3. खोट नज़र आना (वही, पृ.70)

विवेच्य कहानी किस्सागोई शैली में लिखी गई है |

4.28.6 **उद्देश्य** :-

धर्म के नाम पर किए जानेवाले काले कारनामों पर प्रकाश ड़ालना, विवेच्य कहानी का उद्देश्य है |

4.29 बुध्दू

4.29.1 **कथावस्तु** :-

' रोशन प्रेमयोगी ' द्वारा लिखित ' बुध्दू ' कहानी का बुध्दू मेधावी छात्र, गरीब है अतः कोई उससे दोस्ती नहीं करता | लेकिन स्मृति दिल से अच्छे और सच्चाई का साथ देनेवाले बुध्दू से दोस्ती करती है | कोई उसका मजाक उड़ाता है तो वह उसकी शिकायत भी करती है |

4.29.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

बुध्दू : बुध्दू गरीब, मेधावी छात्र, अच्छा दोस्त, अच्छा पोता, अध्यापकों के प्रति आदर रखनेवाला इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

स्मृति : स्मृति सच का पक्ष लेनेवाली, सच्ची दोस्त, अन्याय के खिलाफ आवाज उठानेवाली, होनहार छात्रा के रूप में चित्रित है |

गौण पात्र :- विवेच्य कहानी में सुजान गुरूजी, अध्यापिका भूमिका ये गौण पात्र चित्रित हैं, जिनका कार्य प्रसंगानुकूल हैं |

4.29.3 **कथोपकथन** :-

पात्रों का चरित्र - चित्रण करनेवाले संवाद :

जैसे - " बुध्दू - मैंने चोरी नहीं की है, मैं क्षमा नहीं माँगूगा ss.

सुजान गुरूजी - जिद्दी मत बनो बुद्धिमान !

बुध्दू : गुरूजी ! मेरे बाबा कहते हैं, सच्चाई के रास्ते पर चलो और दुर्जन के आगे कभी मत झुको " [44]

विवेच्य संवाद पात्रों का चरित्र - चित्रण करने में सहायक बने हैं, ये सारगर्भित अतः प्रभावोत्पादक है |

4.29.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में ' पाठशाला ' का वातावरण चित्रित किया है | विवेच्य कहानी पाठशाला के आँगन और कक्षा आठ ' ए ' में दो दिन की अवधि में घटित होती हैं |

4.29.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, सुबोध, पात्रानुकूल, परिस्थितिनुकूल प्रभावी हैं | कहानी के संवाद रोचक एवं प्रभावशाली हैं |

विवेच्य कहानी में ' वर्णनात्मक शैली ' का प्रयोग किया है | कहानी में ' सुजान गुरूजी ' द्वारा बतायी गई ' न्यायी शेर ' की कहानी का वर्णन उचित बना है |

4.29.6 **उद्देश्य** :-

आदर्श, छात्रप्रिय अध्यापक कक्षा द्वारा उपेक्षित गरीब छात्रों को अपनाने में, कक्षा द्वारा इन्हें आदर देने में सहायता प्रदान करते हैं, यह कहानी का उद्देश्य है |

4.30 **बास्सा कल्लू गिर का चोगा**

4.30.1 **कथावस्तु** :-

' हरिपाल त्यागी ' द्वारा लिखित ' बास्सा कल्लू गिर का चोगा ' कहानी का नायक गुसाई समाज का ' कल्लू ' लोककला के द्वारा अपना जीवन खुशी से जी रहा है | लेकिन ये बात मुखिया लंबड़दार को अच्छी नहीं लगती अतः वे लोगों को बहला - फुसलाकर कल्लू को बदनाम करते हैं | इस कहानी का अंत नाट्यमयी है |

4.30.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :

कल्लू गिर : कल्लू गुसाई, गरीब , कला संपन्न, शराबी, शोषित आदि के रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में लंबड़दार ताऊ, उस्ताज़ मुंशीराम ये गौण पात्र चित्रित हैं | उनका कार्य कहानी में प्रसंगानुकूल हैं |

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

4.30.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी में कुल तीन संवाद हैं जिसमें पात्र एकतर्फा बोलते हैं, आगे का पात्र चुप रहता है | जैसे -

" लंबड़दार - क्यों बे, तुने अपने उस्ताज़ के माल पर ही हाथ साफ कर लिया, पठ्ठे अपने ही मालिक कू जरब मार दी ... " [45]

विवेच्य संवाद पात्रों का चरित्र - चित्रण करनेवाले मार्मिक, अर्थपूर्ण हैं |

4.30.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में ग्राम्य वातावरण चित्रित है | कहानी मुखिया के घर के सामने इस स्थल पर घटित होती है |

4.30.5 **भाषा - शैली** :-

गालियों से युक्त भाषा का प्रयोग :-

उल्लू के पठ्ठे, ' साली ', ' गधी ', आदि |

मुहावरे : 1. पैसे हज़म करना (बास्सा कल्लू गिर का चोगा, पृ.19)

2. उल्टा - सीधा बोलना (वही, पृ.23)

3. हाथ साफ करना (वही, पृ.24)

ध्वन्यार्थक शब्द : टप-टप, गुड़-गुड़, चूं-चूं, धप्-धप् आदि |

विवेच्य शब्दों के प्रयोग से कहानी में रोचकता, मिठास निर्माण हुई हैं | विवेच्य कहानी में ' कथात्मक शैली ' का प्रयोग किया है |

4.30.6 **उद्देश्य** :-

उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण दिखाना, कहानी का उद्देश्य है |

4.31 **प्रतिरोध**

4.31.1 **कथावस्तु** :-

' शैलेन्द्र सागर ' द्वारा लिखित ' प्रतिरोध ' कहानी की नंदिता परित्यक्ता नारी है | दीपंकर के साथ उसका रिश्ता दोस्ती से प्रेम तक बढ़ता है | दीपंकर द्वारा अवैध यौन संबंध रखने की बात वह अपने मानसिक प्रतिरोध को झुठलाते हुए मानती है |

4.31.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :

नंदिता : नंदिता परित्यक्ता नारी, कॉलेज अध्यापिका, माँ, अकेलेपन से पीड़ित होकर दीपंकर से प्रेम करनेवाली नारी इन रूपों में चित्रित हैं |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में दीपंकर, नंदिता का बेटा नितीन ये गौण पात्र चित्रित है जो कथानक को गति देने में सहायक हुए हैं |

4.31.3 **कथोपकथन** :-

पात्र चरित्र - चित्रण करनेवाले

जैसे - " नंदिता - बेटा तीन दिन से फोन नहीं किया ...

नितीन - यस मॉम यहाँ छुट्टी कहां मिलती है. फर्स्ट ईयर में वैसे भी खूब मेहनत करनी पड़ती है. अच्छा ग्रेड आ गया तो ब्रांच तक चेंज हो सकती है |

नंदिता - तेरे जाने से घर एकदम सूना हो गया है ..." [46]

विवेच्य कहानी के संवाद स्वाभाविक है, जो पात्र चरित्र - चित्रण में सफल हुए हैं |

4.31.4 **देश - काल- वातावरण** :-

विवेच्य कहानी नंदिता के घर, एक होटल और सेमिनार इन स्थलों पर घटित होती है | कहानी से समय और वातावरण का पता नहीं चलता |

अंग्रेजी शब्द - ग्रेड, ब्रांच, डिस्टर्बड, कॉर्नरर्ड, विजिटिंग कार्ड, कम्पोज्ड़, कांफीडेंट, आदि |

विवेच्य कहानी में पात्रों के माध्यम से ' कथात्मक शैली ' में कहानी लिखी है | साथ ही नंदिता के वैवाहिक जीवन की बातें स्मृति तरंगों द्वारा दर्शाते हुए ' पूर्वदीप्ति शैली ' का भी प्रयोग किया है |

4.31.6 **उद्देश्य** :-

परित्यक्ता नारी की समस्या दर्शाना, कहानी का उद्देश्य है |

4.32 लू में खिला फूल

4.32.1 **कथावस्तु** :-

' राजेश झरपुरे ' द्वारा लिखित ' लू में खिला फूल ' कहानी सेवानिवृत्त अरविंद सिंग और उनकी पतिव्रता पत्नी कुंती के सुखी एवं खुशहाल दांपत्य जीवन पर आधारित है |

4.32.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

अरविंद सिंग : अरविंद गुस्सैल स्वभावी, सेवानिवृत्त, पत्नी को मारपीटने वाले, अच्छे पिता इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित हैं |

कुंती : कुंती अरविंद जी की पत्नी, पतिव्रता नारी, गँवार, अच्छे संस्कारोंवाली, अच्छी माँ, अच्छी पत्नी के रूप में चित्रित है |

4.32.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद प्रवाही रोचक हैं | जैसे -

" पति - कुछ कहा तुमने ?

पत्नी - नहीं. आप मेरी शरबत की बोतल में से थोड़ा शरबत और ले लीजिए.

पति - तुम सदैव मेरी अम्मा बनी रहना. पूरी जवानी गुज़र गई. तुम्हारे साथ रहते ... कभी तो पत्नी की तरह पेश आया करो. "[47]

विवेच्य कहानी के संवाद पात्रों का चरित्र - चित्रण करते हैं |

4.32.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी बस - स्टैण्ड पर एक दिन की अवधि में घटित होती है | इसमें बस -अड्डे का वातावरण चित्रित है |

4.32.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, प्रवाही हैं |

शब्द - योजना : भाई - बहन, जूते- चप्पल, पढ़ा - लिखा, लुका - छिपी आदि |

विवेच्य कहानी संस्मरण के रूप में लिखी गई है | इनमें दो पात्रों के द्वारा दांपत्य जीवन का यथार्थ ' डायरी शैली ' में लिखा है |

4.32.6 **उद्देश्य** :-

पतिव्रता नारी के चरित्र पर प्रकाश ड़ालना, कहानी का उद्देश्य है |

4.33 **लाशें**

4.33.1 **कथावस्तु** :-

' रश्मी वी.आर.' द्वारा लिखित ' लांशें ' कहानी का नवविवाहित पहरेदार पत्नी से विवाद होने पर पहरा देने आता है | जो दिवास्वप्न द्वारा एक वेश्या के साथ अपनी अतृप्त कामना को पूरी करता है |

4.33.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :-

पहरेदार - पहरेदार नवविवाहित, लाशघर का पहरेदार इन रूपों में चित्रित है |

गौण पात्र - विवेच्य कहानी में पहरेदार की पत्नी, वेश्या ये गौण पात्र प्रसंगानुकूल चित्रित हैं |

4.33.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद संक्षिप्त एवं रोचक हैं | जैसे -

" लाश - क्या मुझे छोड़ दोगे ?

पहरेदार - तुम कौन हो ?

लाश - मैं गड्ढा खोदनेवाला हूँ. "[48]

विवेच्य संवाद प्रश्न - उत्तर रूप में, पाठक को कहानी पढ़ने के लिए उत्सुक बनाते हैं |

4.33.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी लाश - घर में घटित होती है |

4.33.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल है | विवेच्य कहानी लेखक ने ' फंतासी ' शैली में लिखी है, जिसमें पहरेदार काल्पनिक जगत् का निर्माण करता है | तथा अपनी इच्छा को पूरी करता है |

4.33.6 **उद्देश्य** :-

' फंतासी ' इस मानसिक जटिल विकृति को दर्शाना, कहानी का उद्देश्य है |

4.34 **चीख**

4.34.1 **कथावस्तु** :-

' अजय नावरिया ' द्वारा लिखित ' चीख ' कहानी का नायक पैसों के लालच में और गाँव के पटेल को अमीरी दिखाने के लिए अवैध यौन संबंध रखने का काम करता है | जिसमें उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है |

4.34.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :

दलित युवक : दलित युवक छात्र, पिता का लाड़ला बेटा, टयूशन लेनेवाला, लोभी प्रवृत्ति का, अवैध काम करनेवाला इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में विनायक, बाबा धृजनाथ, डी.सी.पी. वरूण, वरूण की पत्नी शुचिता, मिसेज देशमुख ये गौण पात्र चित्रित हैं | जो कथानक को गति देने का काम करते हैं |

4.34.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद अर्थपूर्ण, मार्मिक, सुबोध हैं | जैसे-

" बाबा - लौट आ बेटा. पेतुरा तू तो जानता है रे खरच करते रहो तो कुबेरे का खजाना भी रीत जाता है. भूख में जीव को जहर नहीं खाना चाहिए. चल इधर आ.

बेटा - हूं. "[49]

4.34.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में ग्राम्य और महानगरीय वातावरणों का चित्रण किया है |

4.34.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा रोचक, सरल हैं |

अंग्रेजी शब्द - रियली, पे, मदरलेंग्वुज,एक्स्ट्रा, पार्लर, एक्सक्लूसिव आदि |

मुहावरा - इज्जत से रोटी कमाना (चीख, पृ.54)

ध्वन्यार्थक शब्द - धप - धप - धप, पड़ - पड़ - पडर, गड़र - गड़र - गड़र आदि |

विवेच्य कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई है |

4.34.6 **उद्देश्य :-**

जातिभेद, अवैध धंदो का परिणाम दर्शाना; यह कहानी का उद्देश्य है |

4.35 **लौटा तो भय**

4.35.1 **कथावस्तु** :-

' भालचंद्र जोशी ' द्वारा लिखित ' लौटा तो भय ' कहानी में भुवन को अनुभव आता है, पैसों के बल पर अनूचित व्यक्ति भी मनचाही नौकरी पा सकता है | उसकी बहन ' तारा ' अंतर्जातीय विवाह करती है | इस हादसे को बर्दाश्त न कर सकने से उसके पिता की मृत्यु होती है |

विवेच्य कथानक में यथार्थ बातें दिखाई देती हैं |

4.35.2 **पात्र - चरित्र -चित्रण** :-

प्रमुख पात्र :

भुवन : भुवन होनहार, नौकरी में पनपता भ्रष्टाचार देखकर हैरान होनेवाला युवक, विवश, दु:खी प्रेमी, अच्छा भाई, अच्छा बेटा इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित हैं |

तारा : अंतर्जातीय विवाह करनेवाली, अपने फैसलो पर अड़िग रहनेवाली, मायकेवालों से बहुत प्रेम करनेवाली नारी के रूप में चित्रित है |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में कमल, भुवन के अभिभावक, जयंत, भुवन की प्रेमिका अंजलि आदि गौण पात्र प्रसंगानुकूल चित्रित हैं |

4.35.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद पात्र चरित्र - चित्रण करते हैं, ये प्रसंगानुकूल स्पष्ट एवं अर्थपूर्ण हैं | जैसे -

" भुवन - तारा दीदी ! तुम्हारे सुख कितने बड़े हैं ? माँ - बाप के दुःख से बड़े हैं |

तारा - देखो भुवन, मेरा यह निर्णय प्रेम में आतुर किसी भावुक लड़की का निर्णय नहीं था. बहुत सोच - समझकर मैं इस निर्णय पर पहुँची हूँ. " [50]

4.35.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में पारिवारिक वातावरण चित्रित हैं, इससे समय का पता नहीं चलता | विवेच्य कहानी भुवन और तारा के घर में घटित होती है |

4.35.5 **भाषा - शैली** :-

मुहावरे : 1. मशविरा देना (लौटा तो भय, पृ.20)

2. स्तब्ध रहना (वही, पृ.20)

3. नाक कटाना (वही, पृ.20)

विवेच्य कहानी की भाषा पात्रानुकूल भावाभिव्यक्ति में समर्थ है | विवेच्य कहानी लेखक ने ' आत्मकथात्मक शैली ' में लिखी है |

4.35.6 **उद्देश्य** :-

अंतर्जातीय विवाह के कारण निर्मित पारिवारिक स्थिति और नौकरी पाने के लिए अयोग्य व्यक्तियों द्वारा दी जानेवाली रिश्वत इन दो पक्षों पर प्रकाश ड़ालना कहानी का उद्देश्य है |

4.36 **उलटबांसी**

4.6.1 **कथावस्तु** :-

' कविता ' द्‌वारा लिखित ' उलटबांसी ' कहानी की अपूर्वा की माँ बुढ़ापे में अकेलापन, बीमारियों के कारण विवाह करने का निर्णय लेती है | इस निर्णय का विरोध उसके बेटे और जमाई करते हैं पर बेटी अपूर्वा और नातिन उसके दूसरे विवाह में शामिल होते हैं |

विवेच्य कहानी का कथानक पाठकों में कौतुहल जगाता है |

4.36.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र

अपूर्वा : अपूर्वा लाड़ली बेटी , प्रेमविवाह करनेवाली, दिल की बातें माननेवाली, माँ के विवाह में साथ देते समय पति की धमकी से परेशान पत्नी के रूप में विवेच्य कहानी में चित्रित हैं |

अपूर्वा की माँ : बूढ़ी, अकेली, निर्णयों पर अड़िग रहनेवाली, बीमारी से परेशान, दूसरा विवाह करनेवाली महिला के रूप में चित्रित हैं |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में पोती निशा, अपूर्वा का पति अनुज, अपूर्वा के भाई - भाभी ये गौण पात्र प्रसंगानुकूल चित्रित हैं |

4.36.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल है | जैसे -

" अपूर्वा - हलो भाभी, आप इतनी रात गए कोई खास बात ?

भाभी - हलो अप्पू, कोई खास बात नहीं. पर तुम कल पहली ही ट्रेन से यहाँ के लिए चल पड़ो |"[51]

विवेच्य संवाद भविष्य की घटनाओं के प्रति जिज्ञासा बढ़ाते हैं |

4.36.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में पारिवारिक चित्रण किया है | यह अपूर्वा की माँ के घर और रेल स्टेशन इन स्थानों पर तीन दिन में घटित होती हैं |

4.36.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, आकर्षक, अर्थपूर्ण हैं | विवेच्य कहानी ' प्रथम पुरूष एकवचन ' में लिखी गई है | माँ के विवाह की बात अपूर्वा के स्मृति तरंगों में दिखाई देती हैं, अतः यहाँ ' पूर्व दीप्ति शैली ' का प्रयोग किया है |

4.36.6 **उद्देश्य** :-

बेटियाँ अभिभावकों का अच्छे निर्णयों में साथ दे तो पति की अनुमति का खयाल उन्हें करना पड़ता है, यही कहानी का उद्देश्य है |

4.37 **कैसे हो पार्टनर**

4.37.1 **कथावस्तु** :-

' नवनीत मिश्र ' द्वारा लिखित ' कैसे हो पार्टनर ' कहानीं में ' गणेश प्रसाद ' इस कामचोर व्यक्ति के कारण उनके घरवालों पर पड़ी उनकी जिम्मेदारी, उनका अनावश्यक खर्चा, समाज का उनके प्रति उपेक्षित व्यवहार यह दर्शाया है | कथानक का आरंभ सरल, स्वाभाविक है |

4.37.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र

जिप्पी : माँ का लाड़ला, कामचोर, व्यसनाधीन, भगवान का भी मजाक उड़ानेवाला, दुनिया को सुझाव देने में माहिर इन रूपों में विवेच्य कहानी में चित्रित है |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में जिप्पी की माँ, उसका बड़ा भाई ये गौण पात्र चित्रित हैं जो प्रसंगानुकूल चरित्र - चित्रण करने में सफल हुए हैं |

4.37.3 **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद पात्रानुकूल,रोचक है |

जैसे - " पर्यटक - ही इज हनुमान.

जिप्पी - इफ आयम नॉट मिस्टेकेन इज ही दि मैन हू इंवेंटेड होमियोपैथी " [52]

4.37.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य चरित्रप्रधान कहानी से देश - काल - वातावरण का सुंदर निर्वाह हुआ है |

4.37.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक हैं | इसमें अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है |

मंत्रों का प्रयोग : ओम भूर्व भूवः स्वः ..., उं रां राहवे नमः आदि |

विवेच्य कहानी में कथात्मक शैली का प्रयोग किया गया है |

4.37.6 **उद्देश्य** :-

कामचोर व्यक्ति की मानसिकता, उसके साथ समाज का उपेक्षित व्यवहार कहानी द्वारा बताना, यह लेखक का उद्देश्य है |

4.38 **ओं नमो शिवाय**

4.38.1 **कथावस्तु** :-

' हर्षदेव ' द्वारा लिखित 'ओं नमो शिवाय ' कहानी के पुरचुरे धर्म का काम समझकर कॉलोनी के लोगों को अपना पूजा-घर दर्शन के लिए खुला करते हैं लेकिन कॉलोनी के लोग स्वार्थांधता के कारण उसे सार्वजनिक मंदिर में परिवर्तित करते हैं |

4.38.2 **पात्र चरित्र - चित्रण** :-

प्रमुख पात्र

पुरचुरे : पुरचुरे शिव भक्त, गृहस्थी में खुश व्यक्ति, दयालु लाचार, सीधे सरल स्वभाव के व्यक्ति, कॉलोनी द्वारा ठगे गए, सकुचाये, दुःखी इन्सान के रूप में विवेच्य कहानी में चित्रित हैं |

गौण पात्र : विवेच्य कहानी में कॉलोनी की कपूरनी, माली कुलिंदर, बनवारी पंडित ये गौण पात्र प्रसंगानुकूल कहानी को प्रवाही बनाने में सहायक बनते हैं |

4.38.3. **कथोपकथन** :-

विवेच्य कहानी के संवाद, पात्रानुकूल स्वाभाविक हैं | जैसे -

" पुरचुरे - यार, मैं अब जल्दी अपने फ्लैट से छुटकारा चाहता हूँ.

आहुजा - फ्लैट तो आपका सौ टका खरा है, पैसे भी अच्छे मिलेंगे, पर मंदिर का पचड़ा हटाना पड़ेगा. "[53]

4.38.4 **देश - काल - वातावरण** :-

विवेच्य कहानी में धार्मिक वातावरण चित्रित है | विवेच्य कहानी पुरचुरे के फ्लैट में स्थित मंदिर इस स्थल पर एक दिन की अवधि में घटित होती है |

4.38.5 **भाषा - शैली** :-

विवेच्य कहानी की भाषा सरल, पात्रानुकूल है, इसमें पुनरूक्तिवाले शब्द, अंग्रेजी शब्द इनका भी प्रयोग किया है |

मुहावरे : 1. फूला न समाना (ओं नमो शिवाय, पृ.59)

2. वारे - न्यारे होना (वही पृ.61)

विवेच्य कहानी में ' कथात्मक शैली ' द्वारा लेखक पाठकों को पुरचुरे का किस्सा सुनाता है |

4.38.6 **उद्देश्य :-**

भक्ति स्वयं को खुश रखने के लिए की जाती है, दूसरों को सुविधा देने के लिए नहीं; यह कहानी का उद्देश्य है |

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन करने के पश्चात् जो निष्कर्ष पाये गए हैं ; वे निम्नलिखित हैं |

' वर्ष - 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों के कथानक में समाज में जीवन जीनेवाले आम आदमी समाज के अंतरंग सत्य बातों का उद्घाटन करते हैं | इनमें जन सामान्य के अंतर्मन में व्याप्त पीड़ा का चित्रण किया गया हैं | महानगरीय परिवेश के कारण निर्माण हुई विभक्त कुटूंब पद्धति के आधार पर ' प्रेतकामना ', ' प्रतिरोध ' इन कहानियों का चित्रण दृष्टव्य हैं | ग्रामीण

परिवेश अर्थात् ग्राम्य समाज, उनकी मानसिकता को ' बुध्दू ', ' कंठ फटी बासुरी ', ' बास्सा कल्लू गिर का चोगा ' ये कहानियाँ उजागर करती हैं | जीवन के विविध पक्ष - अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, विकलांगों की स्थिति आदि बातों पर आधारित विवेच्य कहानियों के कथानक स्वाभाविक एवं विश्वसनीय हैं | इनमें संघर्ष, करूणा दृष्टव्य होती हैं |

विवेच्य कहानियों में अधिकतर निम्न वर्गीय पात्रों का विवेचन किया गया है | कई कहानियों के पात्र यथार्थ का चित्रण करते हैं | उदा :- ' तैंतीस परसेंट ' की नीरा चौधरी, शोकगीत का ' कुणाल ' आदि | उच्च - वर्गीय पात्रों का चरित्र - चित्रण करते समय लेखकों ने पात्रों की सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का चित्रण बारीकी से किया है | जैसे ' कंठ फटी बासुरी ' के बिजली दुबे, ' पब्लिक ' के घूरनसिंह आदि | कई पात्रों का चित्रण करते समय लेखकों ने ' मैं ' शैली का प्रयोग किया हैं | चरित्रगत विशेषताओं को बताते समय विवेच्य कहानियों में पारिवारिक संबंध, बच्चों की मनोवृत्ति, पात्रों के स्वभाव विशेष को दर्शाया गया है |

विवेच्य कहानियों के कथोपकथन कथानक को गतिशील बनाना, पात्रों का चरित्र - चित्रण दो पात्रों के परस्पर वार्तालाप से दृष्टिगोचर होते हैं | इनकी भाषा पात्रानुकूल हैं | जैसे - ' कंठ फटी बासुरी ' की कान्ह की पत्नी की भाषा एवं भगवानो देवी की बिहारी भाषा ' तैंतीस परसेंट ' में दृष्टव्य हैं | कुछ कहानियों में संवाद कम हैं | लेखक द्वारा वर्णित परिवेश घटनाओं का वर्णन, पात्रों की क्रियाशीलता ही उनके चरित्रों का उद्घाटन करते हैं | जैसे - ' उलटबांसी ',' चाची ',' चीख ' आदि | विवेच्य कहानियों के संवाद संक्षिप्त, अर्थपूर्ण हैं |

विवेच्य कहानियों में अधिकतर देश - काल - वातावरण का ध्यान रखा गया हैं | अधिकतर कहानियों में महानगरीय वातावरण का चित्रण किया हैं | जैसे - ' यही मुंबई है ', ' अनुजा ' आदि | पारिवारिक वातावरण का चित्रण ' बेतरतीब ', ' लौटा तो भय ' आदि कहानियों में दृष्टव्य हैं | धार्मिक परिवेश का चित्रण ' भेड़ियाधसान ', ' कुण्ड़लिनी ', ' ओं नमो शिवाय ' कहानियों में दृष्टव्य हैं | इस तरह विवेच्य कहानियों में ग्रामीण, महानगरीय, धार्मिक, पारिवारिक आदि वातावरणों का चित्रण किया गया हैं |

भाषा के अंतर्गत विवेच्य कहानियों में अधिकतर अंग्रेजी शब्द, पुनरुक्तिवाले शब्द इनका प्रयोग किया गया है | कुछ कहानियों में मुहावरों का प्रयोग किया है | कहावतों का प्रयोग ' कंठ फटी बासुरी ' में किया गया है | विवेच्य कहानियों की भाषा पात्रों के मनोभावों की अभिव्यक्ति करने में सफल हुई हैं |

विवेच्य कहानियों में अधिकतर ' कथात्मक शैली ' का प्रयोग किया गया हैं | ' दावा ', ' शोकगीत ', ' बलात्कार ' आदि कई कहानियों में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया गया है | कई कहानियों में वर्णनात्मक और पूर्वदीप्ति शैलियों का प्रयोग भी दृष्टव्य हैं | इस तरह विवेच्य कहानियों में विविध शैलियों का प्रयोग परिलक्षित होता हैं |

विवेच्य कहानियों मे आतंकवाद, नारी संबंधित अनेक समस्याओं को समाज के सामने रखकर चिंतन - मनन करने के लिए बाध्य करना कहानियों का उद्‌देश्य हैं | विवेच्य कहानियाँ मनोरंजन के साथ समाज जीवन का यथार्थ चित्रण करने में सफल बनी हैं |

संदर्भ :-

1. कुछ विचार	- प्रेमचंद	-	पृ.29
2. हिंदी कहानी के आधारस्तंभ	- सरजू प्रसाद मिश्र	-	पृ.7
3. हिंदी कहानी की शिल्प विधि का विकास	- डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल	-	पृ.302
4. कहानी का रचना विधान	- जगन्नाथ प्रसाद शर्मा	-	पृ.121
5. हंस, जनवरी, 2005 - शिनाख्त	- नरेंद्र नागदेव	-	पृ.20
6. हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग	- त्रिभुवन सिंह	-	पृ.287
7. हंस, जनवरी,2005 - शिनाख्त	- नरेंद्र नागदेव	-	पृ.15
8. हिंदी कहानी कला	- डॉ.प्रताप नारायण टंडन	-	पृ.445
9. हंस, जनवरी,2005 - प्रेतकामना	- मनीषा कुलश्रेष्ठ	-	पृ.62
10. ' वही '	' वही '	-	पृ.60
11. हंस, फरवरी,2005 - पब्लिक	- रामधारी सिंह दिवाकर	-	पृ.24
12. ' वही '	- ' वही '	-	पृ.21
13. ' वही '	- ' वही '	-	पृ.21 व 22
14. ' वही ' - एक लड़की की मौत	- लवलीन	-	पृ.29
15. ' वही ' - अंधेरे में आकार लेता नाटक	- दूर्वा सहाय	-	पृ.42
16. ' वही '	- ' वही '	-	पृ.23
17. हंस, मार्च,2005 - भेड़ियाधसान	- राजेन्द्र सिन्हा	-	पृ.26
18. ' वही '	- ' वही '	-	पृ.23
19. ' वही ' - मधुबन में राधिका	- गजल जैगम	-	पृ.29
20. ' वही ' - दृष्टि	- जितेन्द्र भगत	-	पृ.44
21. ' वही '	- ' वही '	-	पृ.46
22. ' वही ' - खैरियत है	- विजय	-	पृ.57
23. ' वही ' - त्रिकोण	- राजीव सिंह	-	पृ.59
24. हंस, अप्रैल, 2005 - तैंतीस परसेंट	- नीलिमा सिन्हा	-	पृ.18

25. हंस, अप्रैल, 2005 - तैंतीस परसेंट - नीलिमा सिन्हा - पृ.15
26. 'वही' - शोकगीत - कुणाल सिंह - पृ.22
27. 'वही'- खजांची - कांति देव - पृ.55
28. 'वही' - 'वही' - पृ.60
29. हंस, मई,2005- दावा - प्रियंवद - पृ.30 व 31
30. 'वही' - घर चलते हैं डार्लिंग - नमिता सिंह - पृ.43
31. हंस, जून,2005 - समरवंशी - सोहन शर्मा - पृ.26
32. 'वही' - संस्कार - मायानंद मिश्र - पृ.39 व 40
33. 'वही' - बलात्कार - मुकेश कौशिक - पृ.55
34. 'वही' - अनुजा - अर्चना पैन्यूली - पृ.57
35. हंस, जुलाई,2005 - कंठ फटी बासुरी - रामेश्वर द्विवेदी - पृ.15
36. 'वही' - ड्रैकुला - मुर्शरफ आलम जौकी - पृ.53
37. 'वही' - 'वही' - पृ.54
38. 'वही' - लेफ्टिनंट हॉडसन - रत्नेश्वर - पृ.68
39. हंस, अक्तूबर,2005 - शॉर्ट कट - गुलजार - पृ.17
40. 'वही' - इंतज़ार - कृष्ण बिहारी - पृ.24
41. 'वही' - बेतरतीब - अल्पना मिश्र - पृ.43
42. 'वही' - यही मुंबई है - हरीश चंद्र बर्णवाल - पृ.55
43. 'वही' - कुण्ड़लिनी - मनोज कौशिक - पृ.66
44. 'वही' - बुध्दू - रोशन प्रेमयोगी - पृ.73
45. हंस, नवंबर, 2005 - बास्सा कल्लू गिर का चोगा - हरिपाल त्यागी - पृ.24
46. 'वही' - प्रतिरोध - शैलेन्द्र सागर - पृ.32
47. 'वही' - लू में खिला फूल - राजेश झरपूरे - पृ.71
48. 'वही' - लाशें - रश्मी वी.आर. - पृ.74
49. 'वही' - चीख - अजय नावरिया - पृ.57

50. हंस, दिसंबर,2005 - लौटा तो भय	- भालचंद्र जोशी -	-	पृ.27
51. ' वही ' - उलटबाँसी	- कविता	-	पृ.42
52. ' वही ' - कैसे हो पार्टनर	- नवनीत मिश्र	-	पृ.54
53 ' वही ' - ओं नमो शिवायः	- हर्षदेव	-	पृ.60

*****